दो रुपये का अखबार चार घण्टे में सरकार

अभी-अभी की बात है। बड़नगर जाना था। इन्दौर से रतलाम जाने वाली सुबह साढ़े छः वाली बरसों पूरानी ट्रेन। किसी का भी कोई रिजर्वेशन नहीं। होता भी नहीं। चाहे जहां बैठो। सुबह का समय था लिहाजा समाचार-पत्र पढ़े जा रहे थे। बल्कि अध्ययन किए जा रहे थे। शांत माहौल। गाड़ी चल पड़ी। अखबारों के पन्ने भी यात्रियों में आपस में बंट गए थे। हर कोई पन्ने पढ़ रहा था। सिर्फ गाड़ी की आवाज। लक्ष्मीबाईनगर तक तो शान्ति से खबरें पढ़ी जाती रहीं। फिर आमने-सामने की सीट पर बैठे दो व्यक्ति चुनाव और राजनीति पर चर्चा करने लगे। धीरे-धीरे ट्रेन सरकने लगी और आगे राजनीतिक चर्चाएं भी। चुनाव का वातावरण होने से चर्चाएं धीरे-धीरे आक्रामक बहस या वाक्युद्ध में बदलती लगीं। साथ में बैठे अन्य लोग भी बहस में शामिल हो गए मानो सरकार बनाने का पूरा जिम्मा आज इन्हीं यात्रियों पर आ पड़ा हो। राजनीतिक सरगर्मी थी। यह पार्टी, वह पार्टी, यह नेता, वह नेता, यह बढ़िया वह घटिया।

हिन्दुस्तान ज्ञानचन्दों और रायचन्दों से भरा पड़ा है। बस मौके की तलाश रहती है। सलाहें मुफ्त में मिलती है। शारीरिक तकलीफ का जिक्र करो तो कई बिना डिग्री वाले चलते-फिरते तथाकथित डॉक्टर ईलाज बताने को आतुर रहते हैं। सिर दुख रहा है, सेरिडॉन ले लो। बुखार भी है, कॉम्बिफ्लेम ले लो। अधिक दिमाग वाले भी होते हैं। डॉक्टर की पर्ची देखकर झट से एक्स्पर्ट की तरह चश्मा लगाकर और फिर उतारकर टिप्पणी कर देते हैं। इस प्रिस्क्रिप्शन में यह कम कर दो या यह ज्यादा कर दो। इसके साथ यह भी ले लो। बेचारे ने तकलीफ क्या बताई, नीम हकीम हाजिर। "मैंने तो पहले ही कहा था" कहने वाले भी मिलते हैं। ये तो गजब के बुद्धिमान होते हैं क्योंकि इनको सब कुछ पहले से पता होता है। अफसोस बस इतना रहता है कि ऐसे लोग बताने में कुछ लेट हो जाते हैं। हाँ तो ट्रेन आगे बढ़ रही है। डिब्बे में अब तक सभी लोग अखबार पढ़कर 'विद्वान' हो चुके थे। कहते हैं- 'बोलने का शौक अच्छा है पर सुनने का उससे ज्यादा अच्छा' किन्तु होता उल्टा है। जितना बको उतनी मन की भड़ास निकलती है। मन शान्त और सन्तुष्ट हो जाता है। बस दो रुपये का अखबार पढ़ो और ज्ञान झाड़ो। जैसे दूसरे लोग अखबार पढ़ते ही न हों। एक वोट देने का अधिकार है पर राजनीतिक ज्ञान आसमान पर। 'यार, यंग लोगों की सरकार होना चाहिए', एक बोला। साथ में बैठे एक बुजुर्ग को ताव आ गया। वे अनुभवी बुजुर्ग नेताओं के पक्ष में थे। आता भी क्यों नहीं? आखिर रतलाम तक का सफर तय करना था। बहस चल पड़ी। पक्ष-विपक्ष चलने लगे। सभी बैठे यात्री कहीं न कहीं चर्चा में शामिल होते गए। जितनी अक्ल अखबारों में पढ़कर मिले उसको बढ़ा-चढ़ाकर बोलो और सामने वाले के दिमाग में उतार दो। उन बुजुर्ग (पुराने कांग्रेसी) को भारतीय जनता पार्टी वाले हजम नहीं हो रहे थे। उन्हें आजादी के समय के नेता याद आ रहे होंगे। उस बीजेपी सपोर्टर युवक ने भगवा झंडा सम्हाल रखा था। आक्रामक मुद्रा में। बुजुर्ग को जैसे-तैसे समझौता करना पड़ा। चुप हो गए। वैसे आजकल हो भी यही रहा है। बच्चे समझाते हैं। बड़े उनका लोहा मानते हैं और चुप रहकर अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हैं। ऐसा लगा जैसे किसी पार्षद स्तर के बीजेपी के नेता ने सोनिया गांधी को पार्लियामेन्ट चुनाव में हरा दिया हो। एक सज्जन बड़े ज्ञानी नजर आ रहे थे। खिड़की की सीट पर थे। थोड़ा सुपिरियरिटी कॉम्प्लेक्स की बीमारी रही होगी। इतिहास और राजनीति-शास्त्र के जानकार लगते थे। उनका स्वर धीमा और संयमित था। ट्रेन में उस समय आसपास कोई सवा-सेर नहीं था सो उनकी दुकान चल पड़ी। दूसरे यात्री सुनने लगे क्योंकि उनका अखबारी ज्ञान इनके मुकाबले कमजोर पड़ रहा था। 'अंधों में काना राजा' प्रवचन देता रहा। किसी की बीच में बोलने की इच्छा हुई भी तो वह भी समुचित आत्मविश्वास नहीं जुटा पाया। ऐसा अक्सर हो जाया करता है।

ट्रेन स्टेशनों पर रुकती-रुकती चली जा रही थी। नेहरु, शास्त्री, सरदार पटेल, इंदिरा गांधी से लेकर आज तक के तमाम बड़े-बड़े मंत्री, मुख्यमंत्री और नेता लपेटे जा चुके थे। कश्मीर से कन्याकुमारी तक के सभी क्षेत्रों पर समीक्षा हो चुकी थी। ट्रेन लगभग बड़नगर पहुचने को थी। मैं बैग उठाकर बड़नगर प्लेटफार्म पर उतरा और चलते-चलते अपने निजी दैनिक कार्यों का चिन्तन करने लगा। ट्रेन आगे चल पड़ी और डिब्बे के यात्री चुनाव में सरकार बनाने की जोड़तोड़ करते हुए रतलाम की ओर। वक्ता बनो अखबार पढ़कर। अखबार पढ़ो और बकते जाओ। कहीं न बोलने को मिले तो ट्रेन का डिब्बा बढ़िया मंच है बोलने के लिए। ज्ञान के प्रदर्शन के लिये। इन्दौर से बैठो और रतलाम तक सरकार फाईनल। सारी लोकसभा ट्रेन के अन्दर। बड़ी-बड़ी बातें और सफर का मजा। नेताओं को भला-बुरा कह लो तो मन भी शांत व हल्का हो जाता है और अपना स्टेशन कब आ जाता है, पता नहीं चलता। राजनीतिक दलों के गठबंधन और सरकार बनाने की कवायद भले ही कहीं भी चले पर चलो इनकी ओर से सरकार तो अभी ट्रेन के रतलाम पहुंचने तक फाईनल हो ही जाएगी। मैंने सोचा अब कौन सी अस्थिरता बची? ऐसा लगा कि रतलाम पहुंचने में यदि ट्रेन लेट हो गई तो ये लोग शपथ-विधि इत्यादि भी सम्पन्न करवाकर उतरेंगे वहां। हिन्दुस्तान ज्ञानियों और विद्वानों का देश है। यहां हर व्यक्ति हर क्षेत्र की बात कर लेता है। साक्षरता का प्रतिशत जो भी हो पर हर व्यक्ति वक्ता है हर क्षेत्र में। कॉमनसेन्स से कई व्यवस्थाएं चलती है। बोलने वालों में किसको देश की कितनी चिन्ता है? क्या पता? आज बोलने पर टैक्स होता तो सारी बकवासे बन्द हो जाती। कमोबेश शोकसभा के मौन जैसी स्थिति होती। सुनने पर पुरस्कार होते तो हर व्यक्ति चाभी भरे गुड्डे की तरह मुंडी हिलाता नजर आता। सब एक दूसरे से जल्दी-जल्दी सहमत हो जाते। सभी साक्षर एवं निरक्षर, भाषण झाड़ना जानते हैं। श्रोताओं की कमी है। स्थिर सरकार, बेहतर भविष्य की आशा और विचार लिए धीमे कदमों से मैं प्लेटफॉर्म के बाहर हो गया।

❖ प्रस्तुतकर्ता- विनय नागर
125, पलसीकर कॉलोनी, इन्दौर
मो. 9893449974, 9893944336

हाटकेश्वर जयंति की शोभायात्रा में जल बचाने का संकल्प

उज्जैन। म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद शाखा उज्जैन हाटकेश्वर देवालय न्यास बंबाखाना, हरसिद्धि, नागर युवक मंडल एवं नागर महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में ईष्ट देव भगवान हाटकेश्वर की जयंती के उपलक्ष्य में उज्जैन नागर ब्राह्मण समाज द्वारा एक विशाल चल समारोह उर्दूपुरा धर्मशाला से निकाला गया जिसमें पालकी में भगवान हाटकेश्वर विराजित किए गए साथ ही बग्गी पर संत शिरोमणि नरसी मेहता का विशाल चित्र स्थापित था व बैंड, घोड़ी, ध्वज आदि शामिल थे।

यह जानकारी देते हुए म.प्र. नागर युवक परिषद के प्रदेश अध्यक्ष लव मेहता, स्थानीय युवा मंडल के अध्यक्ष मनीष मेहता, डॉ. जी.के. नागर आदि ने बताया कि समाज के सैकड़ों भाई बहन पारंपरिक कुर्ते पजामे एवं केशरिया साड़ी में हाटकेश्वर की जय जयकार करते हुए चल रहे थे। समाज की युवा शक्ति जल बचाओं कल बचाओं आदि स्लोगन की तख्तियां लेकर जल संरक्षण का संदेश देते हुए चल रहे थे। चल समारोह का विभिन्न स्थानों पर मंच लगाकर समाज के सदस्यों ने स्वागत कर प्रसाद वितरण किया। चल समारोह के पश्चात संध्या 7 बजे द्वितीय सत्र में समाज की साधारण सभा में परिषद अध्यक्ष विजय पुराणिक ने विगत वर्ष की गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। साथ ही उज्जैन नागर परिषद अध्यक्ष पद पर योगेन्द्र त्रिवेदी व महिला मंडल अध्यक्ष पद पर डॉ. अरुणा व्यास का सर्वानुमति से मनोनयन किया गया। साधारण सभा के पश्चात संध्या 7.30 बजे जिलाधीश अजातशत्रु के मुख्य आतिथ्य में जल संरक्षण पर संगोष्ठी एवं समाज के वरिष्ठजनों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुख्य अतिथि द्वारा भगवान हाटकेश्वर के मुखौटे पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन कर संगोष्ठी व सम्मान समारोह को प्रारंभ किया। सरस्वती वंदना प्रिया मेहता व अतिथि परिचय डॉ. रमाकांत नागर ने प्रस्तुत किया।

जिलाधीश ने जल संरक्षण पर समाज द्वारा किए जा रहे रचनात्मक कार्यों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए समाज के सर्व श्री किशनलाल जोशी, पं. पूर्णानंद व्यास, डॉ. जी.डी. नागर, डॉ. कमलकांत मेहता, डॉ. चन्द्रकांत व्यास, रमेश मेहता 'प्रतीक' एवं श्रीमती सुशीला मेहता, श्रीमती इंदिरा मेहता, श्रीमती श्यामा त्रिवेदी को शाल, श्रीफल व प्रशस्तिपत्र भेंटकर सम्मानित किया एवं अपेक्षा की कि समाज हित में सदैव कार्य करते रहेंगे। साथ ही स्व. कपिल मेहता स्मृति पुरस्कार समाज के दो प्रतिभावान हिमांशु व्यास एवं वंदन मेहता को प्रदान किया। अंत में समाज द्वारा जिलाधीश को स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। कार्यक्रम में न्यास अध्यक्ष सर्वश्री डॉ. जी.के. नागर, विजय पौराणिक, पं. विजयशंकर मेहता, डॉ. नरेन्द्र नागर, डॉ. रमाकांत नागर, डॉ. दिलीप नागर, डॉ. प्रदीप व्यास, मनुभाई मेहता, सुरेन्द्र मेहता, 'सुमन', पं. रामप्रसाद रावल, हेमंत त्रिवेदी, योगेन्द्र त्रिवेदी, हेमंत व्यास, मनीष मेहता, दिलीप मेहता, रामकृष्ण व्यास, कृष्णकांत शुक्ल, अतुल मेहता, शैलेन्द्र व्यास, देवेन्द्र मेहता, अमित नागर, विकास नागर, संजय व्यास, राकेश नागर, मधुसुदन नागर, प्रमोद त्रिवेदी, रमेश नागर परोत, डॉ. मनोज शर्मा, डॉ. सतीश शुक्ल, नवीन त्रिवेदी, रंजन जोशी, संतोष नागर, अजय प्रकाश मेहता, विजय शर्मा, संजय त्रिवेदी, सुशील त्रिवेदी, पं. कैलाश शुक्ल, पं. कैलाश नागर, महिला मंडल की श्रीमती डॉ. मधु नागर, डॉ. अरूणा व्यास, श्रीमती विजयलक्ष्मी नागर, श्रीमती आभा मेहता, सुनीता मेहता, नेहा मेहता, निर्मला नागर, डॉ. तृप्ती नागर, प्रीति शर्मा सहित समस्त स्वजाती बंधुगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन म.प्र. नागर युवक परिषद के प्रदेश अध्यक्ष लव मेहता ने किया। आभार डॉ. जी.के. नागर ने माना।

प्रस्तुति- मनीष मेहता, उज्जैन

।। श्री गणेशाय नमः ।।

विजय स्टील डेकोर

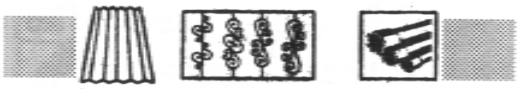

35, धनवन्तरी नगर, जी-1, राजसुधा अपार्टमेन्ट,
दधिची चौराहा, इन्दौर फोन 2321578,
मो. 98268-32786, 98936-24291

।। श्री सांई नमामि नमः ।।

फाइबर शीट मनभावन रंग एवं डिजाईन्स में रेडी स्टॉक में उपलब्ध
घर में बाल्कनी एवं सीढ़ीयों में उपयोग होने वाली
Railing Stair Case/Casting/Wrought Iron/Stainless Steel, Brass Exclusive
G.P. Fitting "Spring", Sanitary Fitting Gold Line. C.P.
की सम्पूर्ण श्रृंखला व सभी कम्पनियों के.जी.आई.पाइप के विक्रेता
सभी प्रकार के हार्डवेयर का सामान इन्दौर शहर के मूल्य पर
आपकी कालोनी में उपलब्ध

R.K. Dave (Pappu)

जो विनम्र हैं, वे ही धरती के अधिकारी है

1. सच्चा धर्म एकांतवास में नहीं बल्कि जगत में रहकर त्रस्त मानवता की सेवा करने में है। श्रम और परोपकार ही असली पूजा और बंदगी है।

2. मनुष्य संसार में जीने की इच्छा, पाने की लालसा व कर्म करने की इच्छा इन तीन कारणों से मकड़ी के जाल की तरह फंस जाता है। यदि जीने की इच्छा मिट जाए, लोभ लालच की भावना समाप्त हो जाए तथा कामवासना का दमन हो जाए तो मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को समझ सकेगा।

3. जीव और ईश्वर के मिलन में माया ही विघ्न डालती है माया मन को चंचल बनाती है व ईश्वर से दूर करती है जिससे जीव की हार तथा माया की जीत होती है। जीव शुद्ध चेतन है किन्तु माया के वश में आकर बंधन में फंस जाता है।

4. मनुष्य को निश्वार्थ सेवा करने से ही वास्तविक शांती एवं प्रसन्नता मिल सकती है, ईश्वरीय ज्ञान राज योग चिरंतन मूल्य सादा व स्वस्थ जीवन के अभ्यास से मनुष्य को आत्मिक बल, आध्यात्मिक शक्ति, श्रद्धा व सामर्थ्य प्राप्त होता है।

5. साधना, परमात्मा का सच्चा स्मरण संपूर्ण तापों को नष्ट करने वाला अचूक रसायन है।

6. संसार में जीव को प्राप्त होने वाला सुख या दुख भाग्य के अधीन होता है। अपनी शक्ति से नहीं। भाग्य को प्रबल मानकर न तो दुख पाने पर संतप्त होना चाहिए और न सुख पाने पर हर्षित।

7. धन्य हैं वे जो मन के दीन है क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जो विनम्र है क्योंकि पृथ्वी के अधिकारी वहीं है। धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध है परमेश्वर को वही देख पाएंगे।

8. अमृत और मृत्यु दोनों ही इस शरीर में स्थित हैं। मनुष्य मोह से मृत्यु को तथा सत्य से अमृत प्राप्त करता है।

9. आज की गलतियां कल अनुभव का गुलदस्ता बन कर सामने आती है। अनुभव से आप गलतियों को पहचानते है ताकि आप उन्हें दोहरा न सकें।

10. सुंदरता तो ईश्वर प्रदत्त गुण है, भाव, भक्ति, कला तथा आचरण में इसकी अभिव्यक्ति होती है। शरीर की सुंदरता तो क्षणिक एवं नश्वर होती है, किन्तु सद्गुणों से मिली सुंदरता अमरता प्रदान कर देती है।

❖ संकलन- सुधीर पांड्या
सरस्वती विहार, दिल्ली

जय हाटकेश सिर्फ नागर बंधुओं हेतु जय श्री कृष्ण

व्यापारी बनें मात्र 500/-रुपए से शुरू करें...

हमारे उत्पादन

- जालिम-एक्स मलम
- जालिम-एक्स क्रीम
- जालिम-एक्स लोशन
- पंचसुधा
- वामा क्रीम
- मेकाडो बाम
- अंजू बाम
- पेन ऑफ ऑईल
- पेन क्योर आइंटमेंट
- हजम टेबलेट
- अंजू कफ सायरप
- अर्शोमृत टेबलेट
- सुगम चूणे
- पाचक चूर्ण
- नारी रसायन

आप हमारे उत्पादन MRP. से आधे दाम पर प्राप्त करें और MRP.पर बिक्री करें।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करे-
नवीन झा
Anju अंजू फार्मास्यूटिकल्स
111/112 अलंकार चेम्बर्स, रतलाम कोठी, ए.बी. रोड, इंदौर- 452001- (म.प्र.)
मोबाइल नंबर- 09425062415

जरुरत में काम आ जाए वह 'व्यवहार'

हमारे समाज में अनेक परम्पराएं हैं तथा बड़ी शिद्दत से समाजजन उन परम्पराओं को निभाते भी हैं। उपनयन संस्कार एवं धार्मिक आयोजनों के दौरान मामेरा प्रथा का विरोध भी किया जाता रहा है तथा हमने देखा है कि मृत्युभोज का बहिष्कार करने वाले समाजजनों को कितनी जिल्लत झेलना पड़ी है। अब समय आ गया है कि हम जरुरत एवं सहुलियत के मुताबिक इन प्रथाओं एवं परम्पराओं में बदलाव कर लें। प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता अनुसार वर्षों से चल रही परम्परा निभाते हैं वह उचित है परन्तु जान-पहचान वाले जो लिफाफे देते हैं वह भद्दा सा लगता है इस परम्परा के लिए चुटकुले भी बन गए हैं। जैसे माता-पिता के साथ गए बेटे ने दुल्हा-दुल्हन के मंडप पर जाकर कहा कि ये लो पैसे तीन थाली के हमारे भी काट लो। करीबी रिश्तेदारों के बीच उपहारों को आदान-प्रदान का मैं विरोधी नहीं हूं परन्तु लिफाफे देना बड़ा अजीब लगता है। पता नहीं 'व्यवहार' के नाम पर यह परम्परा कब से चल पड़ी और कई लोग तो बकायदा अपने यहां कार्यक्रम में आने वाले लिफाफों की सूचि बनाते हैं तथा उसी के अनुसार 'व्यवहार' करते हैं। न कम न ज्यादा। मेरा मत है कि 'व्यवहार' जरुरत के समय होना चाहिए जैसे कोई भी व्यक्ति विवाह समारोह करता है तो उसमें खर्च होने वाले पैसों की व्यवस्था पूर्व में कर लेता है। 'व्यवहार' में आने वाले पांच से दस हजार रु. का उसके लिए कोई मायना नहीं होता। इसी प्रकार आकस्मिक घटनाओं एवं बीमारी के लिए कोई भी पूर्व तैयारी नहीं करता है। हाँ यदि कोई सम्पन्न व्यक्ति है तो वह मेडिक्लेम पॉलिसी या धनसंचय के द्वारा आकस्मिक मुसीबत से छुटकारा पा जाता है। परन्तु गरीब एवं जरुरतमंद समाजजनों को आकस्मिक घटना के समय यदि हम मिलने जाएं एवं यथाशक्ति लिफाफा दे आएं तो? क्या आपको नहीं लगता कि उस समय थोड़ी राशि भी उसकी बड़ी मदद कर सकती है। इसी प्रकार आजकल लोग पगड़ी में रुपए लेने में हिचकने लगे हैं। मेरा मत है कि विवाह समारोह तथा पगड़ी में रुपए लेने की परम्परा खत्म करके यह राशि किसी जरुरतमंद को आकस्मिक घटना के समय दी जाए। मेरा मानना है कि जो कार्यक्रम पूर्व तैयारी से किए जाते हैं उनमें 'लिफाफे से आने वाले धन की जरुरत नहीं पड़ती' उस राशि को आकस्मिक घटना के समय सहयोग बतौर दिया जाए तो देने एवं लेने वाले तो लाभान्वित होंगे ही परमपिता भी प्रसन्न होंगे और उस 'व्यवहार' की सार्थकता भी हो सकेगी।

❖ **पवन शर्मा, इन्दौर**

श्रीमती प्रभादेवी शर्मा स्मृति

आकस्मिक चिकित्सा सहायता कोष

समाज के जरुरतमंद वर्ग को आकस्मिक सहायता हेतु इस चिकित्सा सहायता कोष की स्थापना की गई है इसके अंतर्गत नागर समाज के बंधुओं को अस्पताल में आकस्मिक तौर पर होने वाले खर्च खासकर दवाई के लिए 2 से 5 हजार रु. तक की तुरंत सहायता चेक के माध्यम से की जाएगी। मासिक जय हाटकेश वाणी की संस्थापक श्रीमती प्रभा शर्मा की स्मृति में उनके पगड़ी रस्म 4 अप्रैल 2009 को उपरोक्त कोष स्थापित किया गया जिसमें निम्नलिखित समाजजनों ने नकद आर्थिक सहयोग दिया गया तथा स्वयं शर्मा परिवार ने कोष की स्थापना में 51000 रु. का सहयोग दिया है। इस कोष में प्राप्त समस्त राशि बैंक में मियादी जमा में रखी जावेगी तथा उसके ब्याज से सहयोग दिया जावेगा। इसके अलावा अन्य सम्पर्कों के माध्यम से भी सहयोग दिलाया जावेगा। चिकित्सा सहायता कोष में प्राप्त समस्त राशि की सूचि मासिक जय हाटकेश वाणी में प्रकाशित की जावेगी तथा कोष का आय-व्यय पूरी तरह पारदर्शी रखा जावेगा। उपरोक्त कोष में दान देने एवं सहयोग प्राप्त करने के लिए समस्त जय हाटकेश वाणी सम्पादक मंडल से सम्पर्क करें-

घोषित दानराशि

1.	शर्मा जयहाटकेश वाणी परिवार -	51000.00
2.	श्री सुरेन्द्रजी मेहता, उज्जैन -	5001.00
3.	श्री प्रकाशजी शर्मा, राऊ -	2001.00
4.	श्री जानकीलालजी नागर डिकैन की स्मृति में	1100.00
5.	श्री रामरतनजी शर्मा, उज्जैन -	1001.00
6.	श्री महेशजी मेहता, इन्दौर -	1001.00
7.	श्री नवीनजी नागर, इन्दौर -	1001.00
8.	श्री ओमप्रकाशजी त्रिवेदी, रतलाम -	1001.00
9.	श्री रमेशचन्द्रजी नागर, (चक्की वाले) राऊ -	1001.00
10.	श्री हरिवल्लभजी नागर, इन्दौर -	1001.00
11.	डॉ. गोरीशंकरजी शर्मा माकड़ोन-	1001.00
12.	श्री महादेवजी नागर, सुखेड़ा-	1001.00
13.	श्री व्रजेन्द्रजी नागर, इन्दौर-	501.00
14.	श्री मनोहरलालजी नागर, नजरपुर	501.00
15.	श्री विवेकजी दुबे, इन्दौर-	501.00
	कुल जमा	68613.00

श्रीमती प्रभा शर्मा की स्मृति को चिर स्थाई बनाने हेतु उपरोक्त कोष की स्थापना की गई है। समस्त नागरजनों से विनम्र अपेक्षा है कि कोष में वृद्धि एवं सहयोग प्राप्त करने के लिए तत्पर रहें। **धन्यवाद।**

कर्मों के पवित्र फल

एक पिता ईश्वर की पूजा में संलग्न था और उसने अपने पुत्र को बुलाया और एक रुपये के केले ले आने को कहा। यह पुत्र एक भला लड़का था और उसने केले खरीदे किन्तु रास्ते में उसने एक माँ और बेटे को सड़क पर खड़े देखा। वे बहुत भूखे थे। जब भूखे बालक ने केले देखे, वह उनकी ओर दौड़ा। भूखी मां, लड़के को दौड़ता हुआ देखकर, उसकी ओर दौड़ी और उसे पकड़ लिया किन्तु दोनों ही भूख के कारण गिर पड़े। जब इस नवयुवक ने उन लोगों को भूख से इस प्रकार त्रस्त देखा तो उसने सोचा कि केले घर ले जाने से बेहतर है कि इन भूखे लोगों को खिला दिये जाए। उसने केले इन माँ-बेटे को दे दिये और फिर पानी लाकर भी दिया। ये लोग भूख प्यास से इतने मुक्त हो गये कि उन्होंने अनेक प्रकार से उसको आभार प्रकट किया और खुशी से आंसू बहाये। नवयुवक विद्यार्थी खाली हाथ घर लौटा। जब पिता ने उससे पूछा कि वह केले लाया क्या, उसने हाँ में उत्तर दिया। जब पूछा गया कि केले कहां है तो बेटे ने उत्तर दिया कि जो केले वह लाया है वे पवित्र हैं, वे सड़ेंगे नहीं, दिखाई नहीं देंगे। बेटे ने स्पष्ट किया कि उसने केले दो भूखी आत्माओं को खिला दिये और जो फल वह घर लाया है वे केवल कर्म का पवित्र फल है। तब ही पिता को लगा कि उसका बेटा कितना योग्य है और लगा कि उस दिन उसकी सभी प्रार्थनाएं ईश्वर ने सुन ली हैं। उसने सोचा कि उसका जीवन अत्यन्त पवित्र था कि उसे ऐसा अच्छा बेटा मिला। उस दिन से पिता पुत्र के प्रति बहुत प्यार उमड़ गया और वे एक दूसरे के अधिक समीप आ गये। आजकल पिता-पुत्र के बीच इतनी निकटता दुर्लभ है। यदि तुम ऐसी भावना विकसित कर सको तो अपने देश को त्याग-भूमि एवं योग भूमि के रूप में विकसित करके महान परम्परायें स्थापित कर सकते हो।

❖ **श्रीमती गायत्री मेहता, इन्दौर**

ध्यान करें ब्रह्ममुहूर्त में

भगवान बाबा कहते हैं हमें प्रतिदिन 'ब्रह्ममुहूर्त' (प्रातः 3 से 6) में नियमित रूप से निश्चित स्थान पर बैठकर 21 बार ऊंकार के साथ ज्योति-ध्यान या ईश्वर के किसी भी रूप का ध्यान करना चाहिए क्योंकि उसी समय देवदूत इस ब्रह्माण्ड में विचरण करते हैं और यही हमारी आध्यात्मिक उन्नति के लिये सबसे उचित समय है। एक बार भगवान बाबा से एक भक्त ने प्रश्न किया- स्वामी हम नियमित ध्यान करते हैं परन्तु हमें यह कैसे पता चलेगा कि हमारी आध्यात्मिक उन्नति हो रही है? भगवान ने कहा- 'जब तुम्हारे शुभ संकल्प पूरे होने लगे तो मानो तुम आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर हो रहे हो। ध्यान का संबंध शरीर से नहीं मन से है।' भगवान बाबा की कृपा से मैं भी नियमित रूप से ध्यान करता हूं। मेरा यह अनुभव है कि मेरे सभी शुभ संकल्प बिना विघ्न के पूरे होते हैं और जीवन में शांति का अनुभव होता है। सदा अपने विचारों और संकल्पों में अपने ईश्वर के नाम या रूप में निमग्न रहना ही ध्यान है। ईश्वर का ही चिन्तन, ईश्वर ही श्वास, ईश्वर से ही प्रेम तथा ईश्वर को ही जियो, सही ध्यान है। सदा प्रभु का चिंतन करते रहना ही ध्यान है।

-संकलित

निन्दक नियरे राखिये.....

अपने आपको टटोलने का प्रयास :-

1. क्या हम स्वयं को निन्दा-स्तुति से मुक्त कर सकते हैं?

निन्दाः- परोक्ष में की जाने वाली आलोचना।

स्तुतिः- प्रत्यक्ष में की जाने वाली प्रशंसा।

2. क्या आप निन्दा-स्तुति करने वाले लोगों के साथ रहते हैं? उनकी बातों में रस लेते हैं? हाँ में हाँ मिलाते हैं? कभी विरोध भी करते हैं?

3. क्या आप पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन, ध्यान-आराधना आदि करते हैं? क्या आपका मन शत-प्रतिशत उसी में रम जाता है? इधर-उधर किंचित मात्र भी नहीं होता?

4. क्या ईश्वर पर आपको पूर्ण विश्वास है? कभी सब कुछ ईश्वर पर छोड़ कर चिन्ता मुक्त होने का प्रयास किया है?

5. ईश्वर सदैव मंगलकारी है। कुछ बुरा या अशुभ होने पर भगवान की मर्जी ऐसा कहा है?

6. अच्छे-बुरे समस्त कार्य मन से, वचन से व कर्म से सम्पादित होते हैं। किसी के दिल को दुखाना सबसे बड़ा पाप है। क्या आपने इस नियम का पूर्ण रुपेण पालन किया है?

7. विचार करें कि हम कितने सत्यनिष्ठ, ईमानदार व ईश्वर के प्रति कृतज्ञ है? क्या हम अपने को सुधारने का प्रयास कर रहे हैं?

मेरा आशय ईमानदारी का ढोल पीटने का नहीं है। क्योंकि कोई भी व्यक्ति 100 प्रतिशत सत्यनिष्ठ एवं ईमानदार होने का दावा नहीं कर सकता। ऐसी स्वीकारोक्ति आत्मग्लानि को कम करने में हमारी सहायता करती है। मेरे एक मित्र पक्के ईमानदार है, किन्तु जब उनसे पूछा कि टी.ए. बिल बनाने में एक घण्टा बढ़ाने पर ही आपको डी.ए. की पात्रता आती थी तब आपने बढ़ाया कि नहीं? तो वे मना नहीं कर सकें।

अब सोचिये, निन्दा-स्तुति, पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन, ईश्वर पर पूर्ण विश्वास किसी का दिल दुखाना एवं सत्य ईमानदारी आदि बिन्दुओं पर स्वयं को टटोलने पर हम कहां खड़े हैं?

अभी भी समय है स्वयं को सुधारने का (यदि चाहें तो) ध्यान रहे जब हम दूसरे पर ऊंगली उठाते हैं तो शेष उंगलियों हमारी ओर उठती हैं।

❖ **रामचन्द्र जोशी**

122-बी, संतराम सिन्धी कालोनी, उज्जैन

विशेष सूचना

मार्च 2009 के जय हाटकेश वाणी में घोषित मुरैना के सुप्रसिद्ध राष्ट्रपति पदक प्राप्त डॉ. राधारमण शर्मा एवं डॉ. अनुराग शर्मा के मुखारविन्द से आयोजित श्रीमद् भागवत ज्ञान यज्ञ दिनांक 20 से 26 मई 2009 का कार्यक्रम फिलहाल अपरिहार्य कारणों से निरस्त किया गया है। उपरोक्त आयोजन भविष्य में किया जावेगा तथा उसकी तिथियां एवं स्थान बाद में घोषित किए जावेंगे। असुविधा के लिए क्षमाप्रार्थी हैं।

-सम्पादक

अर्चना नागर को बहादुरी पुरस्कार

झालावाड़। राजस्थान के जिला झालावाड़ में मनोहरथाना निवासी श्रीमती अर्चना नागर को पानी की तेज लहरो में डूबती तीन लड़कियों की जान बचाने के लिये शारिरीक बहादुरी रजत पुरस्कार दिनांक 19 मार्च 2009 को होटल नूर उस सबाह भोपाल मेलेफिटनेन्ट जनरल अरविन्दरसिंह लाम्बा द्वारा प्रदान किया गया।

जान की परवाह न कर छलांग लगाई- श्रीमती अर्चना नागर ने दिनांक 15 अप्रैल 2009 को जयपुर एम.आई. रोड स्थित एक होटल में सम्मान समारोह के दौरान बताया कि यह घटना मनोहर थाना की है। सुबह के समय वह नदी पर नहाने गयी तो देखा तीन युवतियां भी उस समय नदी में उतरी और देखते ही गहरे पानी चली गयी, नदी के तेज बहाव में वह खुद को सम्भाल न सकी और डूबने लगी, मदद के लिये चिल्लाने पर श्रीमती अर्चना पलक झपकते ही नदी में कूद गयी, उन तीनों युवतियों को खतरे में देख उनकी ओर लपकी, तीनों लड़कियां बुरी तरह से डरी हुई थी तथा वह श्रीमती नागर से लिपटने लगी, जिससे खुद उन्हें खतरा होने लगा परन्तु श्रीमती नागर तीनों लड़कियों को बचाने के लिये हर संभव प्रयत्न करती रही ओर उन्हें सकुशल पानी से बाहर ले आयी, श्रीमती नागर कहती है मुझे समझ नहीं आया कि मुझमे इतना साहस कहा से आया, बिना तैरना जाने गहरे पानी से उन बच्चियों को निकालने में सफल हुई। इसके लिये झालावाड़ कलेक्टर ने प्रशास्ति पत्र दिया था बाद में अखबार में समाचार देख जागरुक लोगों ने घटना का विवरण भेजा ओर मुझे ये रजत पुरस्कार प्राप्त हुआ। श्रीमती अर्चना नागर, नागर जनरल स्टोर, मनोहर थाना के प्रोप्रॉयटर श्री प्रेम कुमार नागर की पत्नी एवं श्री अम्बालाल नागर की पुत्रवधु है। श्रीमती अर्चना नागर के इस साहसिक कार्य एवं उन्हें प्राप्त रजत पुरस्कार के लिये नागर ब्राह्मण समाज को गर्व है।

❖ **कुलेन्द्र नागर एड्व्होकेट**
अकलेरा, राजस्थान

इलाहबाद में भी मनी हाटकेश्वर जयंति

प्रयाग (इलाहाबाद) निवासी नागर परिवारों ने इष्टदेव श्री हाटकेश्वर नाथ का वार्षिक पाटोत्सव एवं श्री हाटकेश्वर जयंति दिनांक 8.4.2009 को सौल्लास मनाई। प्रातः 6 बजे मंदिर शिखर पर ध्वजारोहण, तत्पश्चात प्रातः कालीन पूजा-आरती के पश्चात बाबा के श्रृंगार एवं पूजन अर्चन किया गया। सायंकाल 7 बजे से ग्यारह पंडितों द्वारा सस्वर रुद्रीपाठ, फूलों से बाबा का अनुपम श्रृंगार, आरती एवं प्रसाद वितरण किया गया। इन्द्रदेव ने भी जल वर्षा कर पूजन अर्चन में सहयोग दिया। अ.भारत के सभी नागरजनों को हाटकेश्वर जयंति की बधाई।

प्रस्तुति- नित्यानंद नागर, इलाहबाद

विनम्र-निवेदन

विषय- नागर शिरोमणि नरसी मेहता रचित गुजराती भाषा के साहित्य/रचनाएं जय-हाटकेश-वाणी में प्रकाशनार्थ निवेदन।

स्वामी महादेवानंद द्वारा अनुवादित नरसी मेहता के 100 गीतों का हिन्दी अनुवाद डॉ. दयाशंकर जोशीजी के पास संकलित है। हम हाटकेश वाणी में उन गीतों का गुजराती मूल-भाषा में अनुवाद सहित निरंतर श्रृंखला के रूप में प्रकाशन करना चाहते हैं। समस्त नागर भाई-बहिनों से निवेदन है कि निम्नलिखित रचनाओं के गुजराती भाषा में मूल पुस्तक उपलब्ध हो अथवा कहां से उपलब्ध हो सकती है, प्रति पुस्तक की मूल्य सहित जानकारी अवगत कराने का कष्ट करें।

1. श्रृंगार ना पद (40 पद) **BKD** भाग-1 पृष्ठ 5-16, 18-25 और 29-30
2. श्रृंगार माला (30 पद) **BKD** भाग-2 पृष्ठ 18-88
3. भक्ति, ज्ञान अनि वैराग्य ना पद (30 पद) पृष्ठ 3-23, 1-9

संपर्क- 1.दीपक शर्मा-94250-63129 संपादक दैनिक अवंतिका इन्दौर
2. डॉ. नरेन्द्र नागर- मो. 98934-96123
3. प्रो. हरिवल्लभ नागर- मो. 98932-75450

सिर्फ हंसेंगे, सिर्फ हंसेंगे अपने तुझ पर

कुछ विष पान ऐसा हो सेवन पर श्री खंड लगे
देह त्याग कुछ ऐसी हो दुनिया को सामान्य लगे
रोता हो दिल कैसा भी चेहरा सुख सम्पन्न लगे
कारण अज्ञात हो चिर निद्रा सामान्य लगे
दुख-दुख है अब बांटने से कम नहीं होता
सुख-सुख है अब मानने से सत नहीं होता
सोच, सोच कहां है वो परमार्थ की
आज, तू है गुलाम अपनो का एक कहानी थी
कैस-कैसे रोया है मन छुप-छुप कर
मत बताना किसी मूल्य पर भूल कर
सिर्फ हंसेंगे, सिर्फ हंसेंगे अपने तुझ पर
कहेंगे मर गया कुछ नहीं छोड़ गया हम पर

❖ **प्रस्तुति- मुकुल व्ही मंडलोई**
सुदामा नगर, इन्दौर फोन 2484370

गुजराती समाज की सदस्यता लेकर लाभान्वित हों....

इन्दौर। नागरजनों हमारा उत्पत्ति स्थल गुजरात है तथा कई परिवारों में आज भी गुजराती भाषा बोली जाती है। हमको गुजरात से इस क्षेत्र में आए कई वर्ष हो गए है अतः हम अपनी मातृ भाषा (गुजराती) भूल गए अब पुनः ऐसी परिस्थितियां निर्मित हुई है कि हम गुजराती भाषा को अपनाएं बल्कि श्री गुजराती समाज की सदस्यता भी लें। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि कुछेक नागर परिवारों ने गुजराती समाज की सदस्यता पूर्व में प्राप्त कर ली है। वर्तमान में यह समाज सदस्यता देने के मामले में सख्त हो गया है। सबसे पहले आप यह समझ लें कि गुजराती समाज की सदस्यता से हमें क्या लाभ प्राप्त होगा?

इन्दौर शहर में श्री गुजराती समाज द्वारा संचालित अनेक स्कूल-कालेज है जहां समाज के लोगों को 30 से 50 प्रतिशत की छूट दी जाती है। ये स्कूल-कालेज ट्रस्ट द्वारा संचालित होने से उम्दा प्रकार की शिक्षा-दीक्षा प्रदान करते हैं जो हर प्रकार से महंगी नीजि शिक्षण संस्थाओं से लाख दर्जे अच्छी है। जो नागर परिवार समाज की सदस्यता ग्रहण कर लेंगे उन्हें स्वतः शिक्षण शुल्क में रियायत प्राप्त हो जाएगी। वर्तमान में समाज की सदस्यता के लिए कुछ नियम है, जैसे समाज के सदस्यता रजिस्टर में सदस्यता के लिए पांच उपनाम होना आवश्यक है जैसे नागर, मेहता, मंकड, शर्मा आदि उपनामों के समाजजनों को उन्होंने सदस्य बना रखा है। इसके अलावा सदस्यता की दूसरी कठिन शर्त है गुजराती भाषा का ज्ञान। सदस्यता का आवेदन जमा करने से पूर्व वहां बकायदा साक्षात्कार लिया जाता है वह भी गुजराती भाषा में।

यदि हम सब नागर जन गुजराती समाज की सदस्यता लेना चाहते हों तो समाज के किसी आयोजन में उनके ट्रस्टी बोर्ड के अध्यक्ष श्री पंकज संघवी को आमंत्रित कर सभी नागर उपनामों पर स्वीकृति कराई जा सकती है। दूसरी शर्त पूरी करने के लिए हम नागरजन गुजराती सीखने के लिए प्रयास कर सकते हैं। समाज के सक्रिय कार्यकर्ता श्री नीलेश नागर का कहना है कि सभी समाजजन आपस में चर्चा कर प्रशिक्षण शाला सुविधाजनक तरीके से शुरु कर सकते हैं। दैनिक अवन्तिका कार्यालय के सामने एक धर्मशाला है जहां गुजराती भाषा के ज्ञाता को बुलाकर हम गुजराती सीख सकते हैं। जो भी समाजजन गुजराती समाज की सदस्यता लेना चाहते हो वे कृपया दीपक शर्मा मो. 94250-63129 एवं श्री नीलेश नागर मो. 99070-19524 से सम्पर्क करें।

❖ **प्रबल शर्मा**

नवरात्री की शुभकामनाओं के साथ
हम शॉपिंग के लिये आमंत्रित करते है
इन्दौर एवं प्रदेशवासियों को

हेलोबेबी शॉप फेमेली क्लब
नवजात शिशु से नये-नये मम्मी-पापा तक
विशेषः गर्भवती महिलाओं के लिए गारमेंट और अंडरगारमेंट

न्यूबॉर्न शॉपीः बेसमेंट
बेबी वियर्स, बेबी राइड्स, स्वींग्स् (झुले), बेबी कॉट्स, स्ट्रालर्स, प्रॅम्स, वॉकर्स, फिडर्स, विप्पल्स, टिथर्स, रेटल्स, सुदर्स, ट्रेनिंग कप्स, बेबी कॉस्मेटिक्स, डायपर्स, रिकॉर्ड बुक्स आदि

किड्स शॉपीः ग्राउंड फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, टॉयज, साफ्ट टॉयज, डॉल्स, गेम्स, बुक्स, सीडीज एवं डीवीडीज आदि

टीनएजर्स शॉपी : 1st फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, बेग्स एंड पर्सेस आदि

मेन्स एंड वुमेन्स शॉपी : 2nd फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, कॉस्मेटिक्स, इमिटेशन ज्वेलरी, बेग्स एंड पर्सेस, बेड शीट्स एवं कवर्स, टॉवेल्स आदि

रेस्टारेन्ट : 3rd फ्लोर
शीघ्र ही प्रारंभ

स्थान- हेलोबेबी हाउस, कोठारी मार्केट चौराहा, एम.जी. रोड़, इन्दौर फोन 2531107

कु. अवनि को सुयश

खण्डवा। पूर्व माध्यमिक प्रमाणपत्र परीक्षा 2008-09 में खंडवा नागर समाज की प्रतिभाशाली बालिका कु. अवनि पिता उदयभानु दीवान ने श्री महर्षि दयानंद ऐंग्लो वैदिक माध्य. विद्यालय शिवाजी चौक से 89 प्रतिशत के साथ उत्तीर्ण कर सभी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त की है इनकी इस उपलब्धि पर समस्त दीवान परिवार सहित नागर समाज गौरवान्वित है एवं इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

कु. तारंगी जोशी संस्था में प्रथम

खण्डवा। स्थानीय स्कालर्स डेन इंग्लिश मीडियम हा.सै. शाला की छात्रा कु. तारंगी सरोज कुमार जोशी ने कक्षा 3री में 93.5 प्रतिशत अंक प्राप्त कर संस्था में प्रथम स्थान प्राप्त किया इस उपलब्धि पर समस्त ईष्ट मित्रों एवं सामाजिक बंधुओं ने शुभकामनाएं प्रेषित कर आशीर्वाद दिया।

श्री हनुमान जयन्ति सम्पन्न

खण्डवा। दि. 9 अप्रैल 2009 को श्री हाटकेश्वर मंदिर में हनुमान जयन्ति के अवसर पर सायं 5 बजे से 8 बजे तक सुन्दरकांड का पाठ श्री कृष्णानन्दजी मेहता द्वारा आयोजित करवाया गया। पश्चात उनके द्वारा भंडारा भी आयोजित किया गया। समाज के सदस्यों ने उपस्थित होकर कार्यक्रमों का आनन्द लिया।

रामनवमी सम्पन्न

खण्डवा। श्री हाटकेश्वर मंदिर स्थित राम-सीता के मंदिर में दि. 3 अप्रैल 2009 को रामजन्म मनाते हुए 'रामनवमी' पर्व को सार्थकता प्रदान की। इस अवसर पर रामायण पाठ, तत्पश्चात अध्यक्ष श्री हाटकेश्वर नागर मंडल नागर समाज खंडवा श्री देवीदास पोत्दार एवं सचिव श्री प्रेमनारायण व्यास द्वारा रामसीता लक्ष्मण का पूजन करने के पश्चात दोपहर 12 बजे पंडित अरविन्द व्यास द्वारा रामजी का जन्म कराते हुए आरती का कार्यक्रम सम्पन्न किया। इस अवसर पर समाज के सदस्यों ने भी प्रसाद ग्रहण किया।

सड़क दुर्घटना में असामयिक निधन

देवास। विगत 28 अप्रैल को एक दर्दनाक हादसे में रूपाखेड़ी के सुप्रसिद्ध पटेल श्री हरिनारायण शर्मा के प्रपौत्र एवं श्री सुभाष शर्मा के सुपुत्र श्री अजय शर्मा का 21 वर्ष की अल्पायु में सड़क दुर्घटना में देहांत हो गया। अजय के असामयिक निधन से समुचे नागर समाज को आघात लगा है। जनपद सभापति श्री मोहन शर्मा सहित समाज के गणमान्य नागरिकों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। जय हाटकेशवाणी सहित समस्त नागर समाज इस दुःख में शर्मा परिवार का सहभागी है।

हमारी बेटियां

1. हमारी जान है बेटियां हमारी शान है बेटियां
दया का भण्डार है बेटियां, घर की आन है बेटियां
गरम तवे की आग की तरह क्यों तपती है बेटियां
आसमान के चांद की तरह, शीतल है बेटियां
हमारी जान है बेटियां

2. क्यों इतना दर्द सहती है बेटियां, हर वक्त क्यों पिसती है बेटियां
इतनी कोमल है बेटियां, गंगा सी पावन है बेटियां,
दोनों कुलों की लाज रखती है बेटियां, देहली की लाज है बेटियां
क्यों इतनी जल्दी घरवालियां बन जाती है बेटियां

3. क्यों समझते है बोझ बेटियों को,
बेटे से ज्यादा चाह रखती है, बेटियां
घर में कैद करने को नहीं बेटियां,
आसमान की उड़ान भरती है, बेटियां
घर की फुलवारी भाई की लाड़ली
राखी की शान है बेटियां
हमारी जान है बेटियां...

4. पराया धन नहीं, माँ-बाप की दौलत है बेटियां
सागर की तरह विशाल नौ दिन पूजी जाती है बेटियां
लड़कों से कम नहीं भारत की शान है बेटियां
हमारी शान है बेटियां।

श्रीमती चारूमित्रा नागर
खजराना, इन्दौर मो. 98266-67059

स्व. श्रीमती शशीकला जोशी

प्रथम पुण्य तिथि दिनांक 1-5-2009

जाने वाले कभी नहीं आते,
जाने वाले की याद आती है।

यादों को संजोये हुए हैं :-
सर्व सौ.मधु जोशी, अर्चना जोशी, रेखा जोशी, छाया नागर
वर्षा नागर, प्रत्यंचा, गार्गी, नवोदिता, संधान, वृन्दा, शताक्षी, वृष्टि
हेमन्त जोशी, नन्दन जोशी, मनोज जोशी, राजेन्द्र नागर, सौरभ
नागर, गौतम, अन्तरिक्ष, गौरव, आशीष
122-बी, सतराम सिन्धी कालोनी, उज्जैन

अतिप्रिय नानी से मिले गुण और संस्कार

श्रीमती मनोरमा नागर

मेरी नानीजी श्रीमती मनोरमा स्व. पटेल दुर्गाशंकरजी पटेल का अल्प बीमारी के बाद दिनांक 14 अप्रैल 09 को निधन हो गया। उनसे जुड़ी कई यादें जिन्हें लिखते-लिखते शायद पन्ने भी कम पड़ जाए, मेरी वही यादें मेरी व मेरे भाई बंटी से जुड़ी अनगिनत बाते आप सभी के साथ बांटना चाहती हूं। शायद यही मेरी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। नानी का अर्थ माँ की माँ यानी 'बड़ी माँ' जिनका प्रभाव हम दोनों के जीवन में हमेशा रहा। पापा का स्थानान्तरण जल्दी-जल्दी होने के कारण हम दोनों भाई बहन नानी के पास इन्दौर ही रहे। हमारा घर हमेशा नानीजी के घर के पास ही रहा। मम्मी जब सर्विस करने लगी तब नानी ने ही हमारी देखभाल की। हमारी हर छोटी-छोटी बात का ध्यान रखा। स्कूल बस स्टॉप पर तैयार कर छोड़ना और लौटते वक्त दरवाजे पर हमारी बाट जोहना और फिर गौर से हमारी बातें सुनना यह सब अभी भी मेरी स्मृतियों में ताजा है। जो सुसंस्कार उन्होंने अपने बच्चों को दिए, वे हमें भी मिले। यदि वे अपने बच्चों के साथ देवास में शिक्षा के लिए नहीं रहती तब शायद आज उनके बच्चे इतने शिक्षित नहीं हो पाते। जो गुण उन्होंने अपनी बेटियों को दिए, वे गुण मुझे भी उनसे विरासत से मिले।

एक नागर ब्राह्मण महिला की पाककला मैंने उन्हीं से सीखी। बचपन में मुझसे कहा करती कि रोटियां छोटी व पतली बना, सिकाई ऐसे कर कि वे ना तो कच्ची रहे ना ही जले। नानीजी जब भी समाज में जाती मुझे भी साथ ले जाती। एक दिन वह कहीं जाने को तैयार हो रही थी। जब मैंने पूछा, 'नानीजी कहां जा रहे हो? उन्होंने चिड़कर कहा, 'गंगाजी'। जब मैंने कहा, मैं भी तैयार हो जाऊं? तब उन्होंने हंसते हुए सबको यह बात बताई। उनका सौम्य एवं शालीन स्वभाव सभी को लुभाता था। मेरी चौथी तक पढ़ी नानी ने जो सामंजस्य अपनी बहुओं के साथ बनाया वह शायद एक शिक्षित सास भी ना कर पाए। उनकी लोगों को परखने की क्षमता की दाद देनी पड़ेगी। जब भी कोई नया इंसान उनको अच्छा नहीं लगता तब वे कहती, 'देख कैसो मीठो-मीठो बोलिरयो थो।' मेरे जीवन में उनका इतना अधिक प्रभाव रहा कि मेरे पति विवेक मुझे अक्सर छोटी नानीजी कहकर चिढ़ाया करते हैं। और ये बात सुनकर मुझे उनकी नाति होने का गर्व होता है। उन्हें पुस्तकें वगैरह पढ़ने का भी शौक था। साफ-सफाई का तो उन्हें मेनिया था। नित्य पूजा-पाठ व पूर्णिमा पर सत्यनारायण की कथा करना उनका नियम था। मैंने भी उनसे ही पूजा करना सीखा। बीस वर्ष पूर्व उन्होंने ही एक डायरी बहुत सारे श्लोक लिखकर दिये थे। मैंने तभी से जो सुबह जल्दी नहाकर पूजा करना व मंदिर जाना आदि का नियम बनाया वह आज भी जारी है। बचपन में मैं उनकी पायल देखकर कहती, 'ये पायल मुझे दे दो।' परन्तु मेरा बाल मन यह नहीं जान पाया कि जाने-अनजाने नानीजी मुझे कितनी अमूल्य बाते सिखा रही थी। ये सभी सीख और नसीहतें आज मेरे विवाहित जीवन में काम आ रही हैं। और यह अमूल्य धरोहर कभी भी नष्ट नहीं होगी। अब मैं यही प्रयत्न करूंगी कि यह धरोहर मैं अपनी बेटी व भतीजी कोपल और पंखुरी को दूं। हर दिवाली पर घर में मांडने बनाने वाली हाथों पर मेहंदी लगाने वाली प्यारी नानीजी इस संसार में नहीं है। समझ नहीं आ रहा है उनके बिना कैसे जिएंगे। कहते है आत्मा अमर है। वे कहीं भी रहे, उनका आशीर्वाद सदा हमारे साथ रहेगा। एक बार मेरी बेटी कोपल ने कहा, आप और मैं कितने लकी हैं कि दोनों की नानी है। मैंने उससे कहा कि तुम्हारी नानी और मेरी मम्मी (सरला मेहता) की नानी स्व. श्रीमती मणीबाई नागर को भी मैंने देखा है। मैंने कहा, बेटा तुम्हारी नानी की नानी ने ही मुझे बचपन में नहलाया, संवारा और मेरी देखभाल की है। नानीजी का अपने भाई स्व. कुंजबिहारी नागर और भाभी श्रीमती शांता नागर के प्रति सदा आदर और स्नेह रहा और अपनी चारों बहनों (स्व. शकुन्तला स्व. पुष्पा, पवित्रा एवं सावित्री) की भी लाड़ली एवं स्नेह की पात्र रही। पिछले वर्ष ही जब उनकी बहन पुष्पा मासी का स्वर्गवास हुआ तब उन्होंने कहा था, 'अब मेरा ही नम्बर है।' यद्यपि तब वह पूर्ण रूप से स्वस्थ थी क्योंकि आचार, विचार के साथ उनका आहार भी सात्विक रहा। सादी लौकी की सब्जी और दो रोटियां ही उनका भोजन था। मायके की तरह ससुराल में भी उन्हें भरपूर प्यार-दुलार मिला। नौ वर्षीय बालिका-वधु सास-श्वसुर की आंखों का तारा थी और पति को भी अति प्रिय भी। राजगढ़ रियासत की राजकुमारी लसुड़िया के पटेल परिवार में हवेली की कंवराणी बनी। ऐसी सौभाग्यशालिनी मेरे नानीजी की मृत्यु भी असीम शान्ति से हुई। बचपन में हम दोनों भाई बहन आम बच्चों की तरह मस्ती करते थे। तब वे कहती 'कूटी-कूटी के मेली दूंगा।'

बड़ा होने पर बंटी यही बात दोहराता तो वे मुस्कुरा देती थी। वर्ष 2007 के रक्षा बन्धन पर्व पर मैं उनसे आखरीबार मिली थी। उसके पश्चात वे अपने छोटे पुत्र श्री अनिल नागर के साथ पन्ना चली गई थी। और मैं अहमदाबाद शिफ्ट हो गई। विगत ढाई महिनों से वे इन्दौर में ही थी और बारी-बारी से अपनी तीनों बेटियों और बड़े बेटे सन्तोष के साथ जी भर कर रह ली तथा इन्दौर में रह रहे सारे रिश्तेदारों से भी मिली। मैंने सोचा था कि अहमदाबाद अपने पास बुला लूं परन्तु मेरा दुर्भाग्य रहा कि अन्त समय उनके साथ रह नहीं पाई। जब पन्ना से आई थी तब बहुत सारी पहेलियां एक डायरी में लिखकर लाई थी बंटी के बच्चों पंखुरी और अबीर को बहलाने के लिए। हम दोनों भाई-बहन के बच्चों से उन्हें बहुत लगाव था। बचपन में गर्मी की छुट्टियों में वे हमें ढेरो कहानियां एवं लोकगीत सुनाती और अष्ट-चंग-पो खेलना सिखाती। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि हर जन्म में मुझे यही नानी मिले। अन्तिम दर्शन तो मैं कर नहीं पाई पर उनकी छवि सदा मेरे मन मस्तिष्क में रहेगी। बचपन में मैं मदर टेरेसा बनने के सपने देखती थी। आज सोचती हूं शायद मुझे नानीजी में मदर टेरेसा दिखाई देती थी। हम सभी नाती पोते विवेक, बंटी, रूपा, प्रगति, अमोल, परेश, शिवानी, रंजीता, हर्ष, पूजा, रवि, प्रीति, यश, स्वाति, मनीष, राकेश, गोल्डी, मनीष, ममता, नीलू, राजेश, राहुल, अक्षत, अंशुल, रोली, कोपल, पंखुरी, अबीर, रुचिर, रेवा, भुवन की ओर से देवी स्वरूपा नानीजी को प्यार भरी श्रद्धांजलि।

❖ **सोनिया विवेक मंडलोई**
16, अलोकिक अपार्टमेंट, प्रकाश नगर
सोसायटी मणी नगर अहमदाबाद मो. 9112138061

सरल स्वभाव, राम भक्त

श्री जानकीलालजी नागर का परलोक गमन

डिकैन (जिला नीमच)।सरल स्वभाव एवं राम के प्रति अनन्य भक्त मेरे पिताजी श्री जानकीलालजी नागर (सुपुत्र-स्व. श्री कचरुलालजी-रतनबाई नागर ग्राम डिकैन जि. नीमच) जब 12 वर्ष के थे तभी उनके सिर से अपने पिता का साया उठ गया था। छोटी सी उम्र से उनके संघर्ष की शुरुआत हो गई तथा वे अपनी पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाए लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। अर्जित ज्ञानार्जन के माध्यम से अहमदाबाद जाकर रेल मेल सेवा में नौकरी कर ली। पश्चात उनका विवाह पटवारी श्री लीलाशंकरजी नागर की ज्येष्ठ पुत्री भगवती देवी के साथ हुआ। विवाह पश्चात नौकरी में प्रमोशन हुआ तथा उन्हें ट्रेनिंग के लिए मुंबई भेजा गया। विशेष प्रशिक्षण के बाद उन्होंने 33 वर्षों तक टिकट प्रिंट मशीन पर कार्य किया। सरल स्वभाव एवं हंसमुख श्री जानकीलालजी ने अपने समस्त कर्तव्य निष्ठापूर्वक सम्पन्न किए अपने तीनों सुपुत्र राजेन्द्र, हरिओम तथा कृष्णकांत, पुत्रियां उर्मिला तथा सीमा के विवाह धूमधाम से किए तथा सभी बच्चों को समान दुलार दिया। आपने 57 वर्ष की आयु में नौकरी से मेडिकल ग्राउण्ड पर सेवानिवृत्ति लेकर अपने पुत्र राजेन्द्र को रेल मेल सेवा में नौकरी लगवा दी तथा स्वयं अपनी जन्मभूमि डिकैन चले आए। भगवान पर विशेष श्रद्धा एवं प्रेम के चलते- राम-राम शब्द जपते रहते तथा सबसे खुश होकर मिलते। कभी किसी से भेदभाव नहीं किया। अतिथि का सम्पूर्ण सत्कार करते तथा छोटे-बड़े सबको पूरा सम्मान देते। संघर्षमयी जीवन के बावजूद कभी हिम्मत नहीं हारी। अपने सास-श्वसुर के साथ तीर्थ यात्राएं भी की। आध्यात्मिक भावना से ओतप्रोत होकर स्कूल आते-जाते बच्चों को प्रसाद, चाकलेट फल-फ्रुट बांटते तथा पहले उनसे राम-राम बुलवाते। अपने अवसान 14 अप्रैल 2009 से पूर्व सभी परिवारजनों तथा रिश्तेदारों से मिले तथा अंतिम समय भी हे राम, राम कहते हुए संसार से विदा हो गए। आपका सरल स्वभाव, आध्यात्मिक झुकाव तथा परिवार के प्रति प्रेम कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। सुपुत्र राजेन्द्र-सुनीता, हरिओम-सपना, कृष्णकांत-बबिता एवं पुत्रियां उर्मिला-जेनेन्द्रजी शुक्ला (रतलाम), सीमा-मनीष शर्मा (इन्दौर), तथा नाती-पोते कपिल शुक्ला, रवि शुक्ला, पुनित, अभय, आरती, श्रेया, मिष्ठी, बुलबुल, कुमकुम एवं दीपू हैं। वे भले ही हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनके आशीर्वाद एवं याद सदैव बनी रहेगी। **❖ प्रस्तुति- सीमा-मनीष शर्मा, इन्दौर**

श्रद्धांजलि

श्री जानकीलालजी नागर के निधन पर उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि। जो कि न सिर्फ कर्मठ और मृदुभाषी थे साथ ही उनके सद्विचार भी हमें सद्मार्ग की और ले जाते थे। उनके स्नेह और मिलनसारिता को हम कभी भूल नहीं पाएंगे। हम परमपिता परमेश्वर से करबद्ध निवेदन करते हैं कि वे श्री नागरजी को स्वर्ग में विशिष्ठ स्थान पर विराजित करें एवं दुःख संवप्ता परिवार को आत्मसंबल के साथ इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। **पं. भुवनेश दवे**

लुनेरा जिला रतलाम, मो. 97556-23446

1008 शिवलिंगों का नर्मदा तट पर पूजन अभिषेक कर मनाई विवाह की स्वर्ण जयंति

ओंकारेश्वर। ओंकारेश्वर में माँ नर्मदा के पावन तट पर ममलेश्वर महादेव मंदिर प्रांगण में अटूटखास निवासी श्री श्रीकृष्ण जोशी ने अपनी पत्नी सौ. निर्मला जोशी के साथ 1008 शिवलिंगों का पूजन-अर्चन किया, जिसका परिवार के साथ इष्टमित्रों ने भी दर्शन एवं प्रसादी का लाभ प्राप्त किया। श्रीयुत् श्रीकृष्ण जोशी बहुमुखी प्रतिभा के धनी होकर सम्पूर्ण जीवन कर्तव्यनिष्ठ शिक्षक के रूप में गुजारा। पिताजी स्व. श्री बलीरामजी जोशी एवं माता स्व. श्रीमती इंदिरा बाई ने शतायु उम्र तक आशीर्वाद दिया। एम.ए. तक शिक्षा ग्रहण कर शिक्षा विभाग में शिक्षक से प्रींसिपल एवं ए.डी.आई के पद तक कार्य किया। आपको संगीत का शौक रहा। आपके व्यवहार ने सर्वत्र प्रेम, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठता का संदेश दिया। आपका सम्पूर्ण जीवन सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांतों पर आधारित रहा है। आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री दीपक जोशी भाजपा के नेता है। साथ ही ममलेश्वर प्रसादी ट्रस्ट के मैनेजर भी है। दूसरे पुत्र डॉ.

प्रकाश जोशी जो उज्जैन में ख्यातनाम आयुर्वेदिक चिकित्सक है, जो प्रतिवर्ष शरद पूर्णिमा पर निःशुल्क दमा रोग शिविर का आयोजन करते हैं। तीसरे पुत्र श्री अरुण जोशी ओंकारेश्वर में नागर मेडिकल के माध्यम से अपनी सेवाएं दे रहें हैं। दो पुत्रियों में बड़ी पुत्री श्रीमती ज्योति-ललित नागर (पीपलरावां) एवं छोटी श्रीमती किरण-मयंक भाई अहमदाबाद (गुज.) में है मयंक भाई युरेका फोर्ब्ज में सेवारत हैं। श्रीयुत् श्रीकृष्ण जोशी के विवाह की स्वर्ण जयंति पर समस्त परिवार हेतु दीर्घायु सम्पन्न एवं स्वस्थ जीवन की कामना भगवान महादेव ओंकारेश्वर से करते हैं।

❖ प्रस्तुति- श्रीकृष्णकांत शुक्ल एवं श्री देवेन्द्र मेहता

प्रतिभाशाली शिवम् नागर 'ईन्फोसिस' में

इन्दौर। शिवम् नागर की नियुक्ति देश की अग्रणिय कम्पनी ईन्फोसिस साफ्टवेयर बेंगलौर में साफ्टवेअर इंजीनिजर के पद पर हुई है। आप जनवरी 2009 से कंपनी के मैसुर स्थित विश्व स्तरीय प्रशिक्षण केन्द्र में प्रशिक्षण पर है। शिवम नागर श्री रामवल्लभ नागर एवं श्रीमती मधु नागर के पौत्र तथा श्री मनोज नागर (सहायक परियोजना प्रबंधक, नर्मदा तृतीय चरण) एवं श्रीमती विभा नागर के पुत्र है। आपने 12 वीं की परीक्षा विद्या सागर स्कूल इन्दौर से 82 प्रतिशत अंको से उत्तीर्ण की, तत्पश्चात जयप्रकाश सूचना प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालय, हिमाचल प्रदेश की अखिल भारतीय प्रवेश परिक्षा में उच्च स्थान पर चयनित होकर कम्प्यूटर साईंस इंजिनियरिंग में 7.8 सी.जी.पी.ए. के साथ बी.टेक की परिक्षा उत्तीर्ण की है। आप अपने विश्व विद्यालय में 2 साल तक टेक्नीकल क्लब के प्रेसिडेंट रहे एवं इस दौरान विश्व विद्यालय की वेबसाईट का निर्माण एवं कालेज की पत्रिका का संपादन, डिजाईनिंग आदि का कार्य सफलता पूर्वक किया तथा विश्व विद्यालय के वार्षिकोत्सव में प्रतिवर्ष कार्डिनेटर की ट्राफी विश्व विद्यालय के कुल सचिव के द्वारा प्रदान की गई।

हाल ही में चेक गण राज्य की राजधानी प्राग स्थित 'वर्ल्ड साईंस एवं इंजिनियरिंग अकेडमी एवं सोसायटी' की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका में शिवम का शोध पत्र 'इमेज मोजेकिंग युजिंग म्युरल नेटवर्क' विषय पर प्रकाशित हुआ है। ग्रीष्म कालीन प्रशिक्षण के दौरान आन लाईन शार्पिंग के लिए उपयोगी वेब साईट www.igrab1.com का निर्माण भी शिवम ने किया है। परिवार के सदस्यों एवं मित्रो द्वारा इस अवसर पर बधाई दी गई एवं उत्तरोत्तर प्रगति की कामना की गई। नागर समाज शिवम की इन उपलब्धियों से गौरवान्वित हैं।

यथा नाम तथा गुण, ममतामयी माँ श्रीमती मनोरमा नागर का महाप्रयाण

इन्दौर। अपने नाम के अनुसार मनोरम स्वभाव से युक्त, सरल एवं सादगी पूर्ण ममतामयी माँ श्रीमती मनोरमा नागर (धर्मपत्नी-श्री दुर्गाशंकरजी नागर) का परलोक गमन दिनांक 14 अप्रैल 2009 को हो गया। श्रीमती मनोरमा नागर का जन्म बसन्त पंचमी के दिन सन् 1928 में राजगढ़ (ब्यावरा) में हुआ। आपके पिताजी श्री शंकरलालजी राजगढ़ नरेश के निजी सचिव थे। आपका विवाह मात्र 9 वर्ष की अल्पायु में लसुर्डिया ब्राह्मण निवासी श्रीधरजी पटेल के सुपुत्र श्री दुर्गाशंकरजी नागर के साथ हुआ था। श्रीमती नागर ने अपने पांच बच्चों तथा देवर की दो पुत्रियों की शिक्षा देवास में रहकर पूर्ण करवाई। वे स्वयं अधिक शिक्षित न होने के बावजूद सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र की जानकार थी। उनकी समाचार पत्र एवं किताबों के पठन पाठन में रूचि थी। गृहकार्य में पूर्ण कुशल होने के साथ-साथ पति की समाजसेवा में सच्चे रूप में अर्धांगिनी बनी। विभिन्न पारम्परिक गीत गायन, दीपावली के मांडने बनाने एवं पाककला में निपुणता के साथ घर के रखरखाव एवं स्वच्छता का पूरा ख्याल रखती थी। घर में या आसपड़ोस में किसी के बीमार होने पर उसकी तीमारदारी में कोई कसर नहीं रखती थीं। अपनी अल्पबीमारी के पश्चात अपने छोटे बेटे श्री अनिल नागर के घर मंडला (माँ नर्मदा के पावन तट पर) दिनांक 14 अप्रैल 09 को परलोक गमन हुआ। समस्त रिश्तेदारों एवं परिजनों की उपस्थिति में वहीं मंडला में अंतिम संस्कार किया गया। जबकि शेष उत्तरकार्य प्रोफेसर कालोनी इन्दौर निवासी बड़े सुपुत्र श्री सन्तोष नागर के यहां सम्पन्न हुए। आप अपने पीछे भरा-पूरा सुसंस्कृत परिवार छोड़ गई हैं।

जिसने सिद्धांतों के साथ कभी समझौता नहीं किया ❖ श्रीमती सरला मेहता

मध्यप्रदेश का प्रमुख समाचार पत्र **दैनिक अवन्तिका**

इन्दौर-7, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड फोनः-0731-4085777 मो.-98277-71777

उज्जैन- 2, रानी लक्ष्मीबाई मार्ग फोनः-0734-2554455 फेक्सः-2559777

इन्दौर- 20, जूनी कसेरा बाखल, फोनः-0731-2450018 फेक्सः-2459026

श्रीमती प्रभादेवी शर्मा

आकस्मिक देहावसान से अवाक रह गया समाज

इन्दौर। दैनिक अवन्तिका के संस्थापक एवं समाजसेवी श्री गोवर्द्धनलालजी मेहता की ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती प्रभादेवी शर्मा (धर्मपत्नी श्री शिवप्रसादजी) के आकस्मिक निधन दिनांक 23 मार्च का समाचार जिसने भी सुना वह अवाक रह गया। दरअसल बेन जिससे भी मिलते थे उसे अपना बना लेते थे। परिवार में वैवाहिक सम्बंधों की बात हो या अन्य कोई समस्या बेन पूरी शिद्दत के साथ परिवारों के साथ जुड़ जाया करते थे। उनका किसी समारोह में पहुंचना अपने आप में महत्वपूर्ण होता तथा वहां उपस्थित सभी लोग उनसे मिलकर धन्य हुआ करते थे। बेन के आकस्मिक निधन से हमारे परिवार एवं समाज में एक खालीपन आ गया है।

शोकाकुल परिवार को ढांढस बंधाने सभी रिश्तेदार, समाजजन उपस्थित हुए जो उपस्थित न हो सके उन्होंने पत्र, फोन द्वारा अपनी संवेदना व्यक्त की। बेन के उत्तरकार्य में तेरहवें के दिन 4 अप्रैल को पगड़ी में प्राप्त राशि 2500 रु. श्री नागर धर्मशाला उज्जैन को, इतनी ही राशि 2500 रु. इन्दौर धर्मशाला हेतु दान दी गई। उनकी स्मृति में आकस्मिक चिकित्सा सहायता कोष की स्थापना की गई जिसमें 51000 रु. की राशि शर्मा परिवार ने दान दी।बेन के परलोकगमन की खबरें इन्दौर के सभी समाचार पत्रों, दैनिक अवन्तिका उज्जैन में प्रमुखता से प्रकाशित की गई जबकि इन्दौर से प्रकाशित धार्मिक पत्रिका शिवप्रभा गणेश में प्रथम पृष्ठ पर स्थान दिया गया। अहमदाबाद से प्रकाशित मासिक नागर मित्र में उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्बंधित लेख के साथ देहावसान की खबर फोटो सहित प्रकाशित की गई।

रोटरी मंडल 3040 की न्यूज बुलेटिन जो सभी 74 क्लबों में प्रसारित होती है में भी बेन का समाचार प्रमुखता से प्रकाशित किया गया। सभी रिश्तेदार, समाजजन एवं पत्रकार बंधु, रोटरी इंटरनेशनल से जुड़े महानुभावों ने शोकाकुल परिवार को जो संबल प्रदान किया उसके लिए दैनिक अवन्तिका परिवार हृदय से आभारी है।

सम्पादक

स्व. श्रीमती 'प्रभा बेन' को श्रद्धांजली

पीपलरावां। गत 7 अप्रैल 09 को स्थानीय नागर परिषद पीपलरावां के अध्यक्ष श्री हरिनारायण नागर (पत्रकार) की अध्यक्षता में स्थानीय नागर धर्मशाला में एक साधारण शोकसभा आयोजित कर गत 23 मार्च 09 को जय हाटकेश वाणी इन्दौर की प्रेरणा स्त्रोत श्रीमती प्रभादेवी शर्मा 'बेन' के श्रीजी शरण हो जाने से उन्हें श्रद्धांजली अर्पित की गई। परिषद अध्यक्ष श्री नागर ने उन्हें सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन में समन्वय स्थापित करने वाली प्रतिभावान महिला के रूप में निरूपित किया तो परिषद उपाध्यक्ष श्री त्रिभुवनलाल मेहता, कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार शुक्ल तथा सचिव श्री रमेशचन्द्र नागर तथा पत्रकार श्री भूपेन्द्र नागर ने उन्हें स्नेह, सद्व्यवहार, अतिथि सत्कार में अग्रणी तथा धर्मनिष्ठ महिला के रूप में स्थापित कर श्रद्धांजली दी। शोकसभा में श्री चन्द्रकांत व्यास (दादाभाई) श्री अरुण कुमार त्रिवेदी सहित अन्य सभी परिषद सदस्यों ने दो मिनिट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजली दी।

नई ज्योति दे गई

प्रभा की लकीर
पुंज बन छा गई
स्नेह सहयोग समन्वय की
गरिमा भी बढ़ा गई
अनुभव पाया जिसने
सराबोर हो गया
ममता का प्रत्यक्ष दर्शन पा
कृतार्थ हो गया
मार्ग दर्शन की क्षमता
अद्भूत थी
जीवन्त सहयोग की मूर्ती
प्रबुद्ध थी
हाटकेश की वाणी को नया अर्थ दिया
अभिनव प्रयोग से विश्व को
समृद्ध किया
बहन प्रभा जीवन्त व
पूर्णा थी
शिवप्रसाद की संगिनी
शुभदा थी
प्रकृति ने प्रयास से उन्हें
कुंठित किया
उन्होंने संघर्ष कर नया सा
ज्ञान दिया
न रुके जीवन प्रकृति साथी है
अपनी
कर्म करो फल मिलेगा जरुर
न उदासी
कर्मठ थी कर्म के भेंट वे
हो गई
प्रभा हमें एक नई ज्योति
दे गई

व्रजेन्द्र नागर, इन्दौर

श्री हाटकेश्वर देवालय में भूतभावन भगवान श्री शिवशंकर एवं परिवार की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न

इन्दौर। श्री भगवान हाटकेश्वर के परिवार माता पार्वती, पुत्र कीर्तिक स्वामी एवं मंगल गणेश तथा नंदीगण अर्थात शिव पंचायत की प्राण प्रतिष्ठा के शुभकार्य का आयोजन दिनांक 27-4-09 वैशाख सुदी अक्षय तृतीया संवत 2066 दिन सोमवार, महर्षि परशुराम जयंति के शुभअवसर पर संपन्न हुआ। पिताजी स्व.पं. श्री दुर्गाशंकरजी नागर एवं माता स्व. श्रीमती कुसुमदेवी नागर की पुण्य स्मृति एवं उन्हीं के संकल्पानुसार मूर्तीदान एवं प्राण प्रतिष्ठा का कार्य पुत्र विनोद एवं पुत्रवधु सौ.कां. नीता नागर के द्वारा किया गया। यह कार्य आचार्य श्री गोपालजी नागर ग्राम खजराना, इन्दौर के द्वारा स्वनिवास नटखट नर्सरी स्कूल परिसर में नवनिर्मित देवालय पर पूर्ण हुआ।

आचार्य श्री पं. गोपालजी नागर ने विधिवत पूजन हेतु पितृदेवता आह्वान, सर्व तो भद्र मंडल, लिंगतो भद्र मंडल, षोड़श मात्रिका, सप्त घृत मात्रिका, चतुषसष्ठी योगिनी, क्षेत्रपाल देवता, नवग्रह रूद्र देवता आदि के मंडल स्थापना एवं पूजन अभिषेक कर हवन-यज्ञ की पूर्णाहुती समस्त नागर परिवार एवं उपस्थितजनों द्वारा कराई गयी।

विदित हो कि, स्व. पं. श्री दुर्गाशंकरजी नागर ने अपनी आस्था एवं स्वप्रेरणा अनुसार उपरोक्त मूर्तियों को दान सहित स्थापना हेतु क्रय किया गया था। परन्तु स्वास्थ्य प्रतिकुलता एवं नौकरी में समय अभाव के कारण स्वयं यह कार्य नहीं करवा पाये। तत्पश्चात माता श्रीमती स्व. कुसुम देवी नागर के द्वारा दान कार्य संकलित किया गया था। उत्तरोत्तर कार्य उन्हीं के आशीर्वाद फलस्वरूप पुत्र एवं पुत्रवधु द्वारा स्वजनों की उपस्थिति में सम्पन्न किया गया।

❖ श्रीमती सुनीता पंड्या
खंडवा

इन्दौर में सामूहिक यज्ञोपवित संस्कार एवं युवक-युवती परिचय सम्मेलन

इन्दौर। 30 अप्रैल रविवार को अध्यक्ष श्री प्रवीण त्रिवेदी के निवास पर आयोजित बैठक में आगामी 13 एवं 14 जून को आयोजित सामूहिक यज्ञोपवित एवं युवक-युवती परिचय सम्मेलन के बारे में विचार-विमर्श किया गया। कार्यक्रमों के सुचारु संचालन के लिए विभिन्न कमेटियां गठित की गई तथा महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए इस अवसर पर बड़ी संख्या में समाजबंधु उपस्थित थे। सचिव श्री केदार रावल एवं संयोजक श्री आशीष त्रिवेदी ने सबका स्वागत किया। उपरोक्त आयोजनों के संबंध में तैयारियां शुरु हो चुकी है।

नागर निर्देशिका इन्दौर का प्रकाशन

मासिक जय हाटकेश वाणी के जून 09 अंक में नागर परिवार निर्देशिका इन्दौर का प्रकाशन किया जा रहा है। सूचि में सुधार एवं विज्ञापन हेतु अतिशीघ्र सम्पर्क करें- दीपक शर्मा 94250-63129, पवन शर्मा 98260-95995

नागर महिला मंडल की बैठक 16 मई को

इन्दौर। नागर महिला मंडल की मासिक बैठक आगामी 16 मई 09 को श्रीमती शारदा मंडलोई के 74 नं. विजय नगर स्थित निवास पर आयोजित है। सभी महिला सदस्य आपस में सूचित कर दें तथा इस सूचना को ही निमंत्रण स्वीकार करें।

श्रीमती उषा दवे फोन 2516626,
श्रीमती शारदा मंडलोई फोन 2556266

सार-समाचार

इन्दौर। नीरज मंडलोई IAS MD MPFC & AKVN को संसदीय चुनाव के अवसर पर मुख्य चुनाव आयोग द्वारा उड़ीसा बालासर भेजा गया। वे तीन सप्ताह ड्यूटी पर वहां रहेंगे फिर परिणाम गणना के अवसर पर भी वहीं रहेंगे।

* अमिताभ मण्डलोई को कांग्रेस पार्टी ने चुनाव पर्यवेक्षक बनाकर कांग्रेस पार्टी की ओर से मन्दसौर का प्रभार सौंपा गया है।

बधाई- 27 अप्रैल को श्री विवेक व्यास (सुपुत्र- श्री मनु एवं सौ. सरला व्यास C.P.M.G. Bhopal) का शुभ विवाह सौ. रश्मि सुपुत्री श्री बी.के. दुबे, (मूल निवासी बिष्ठान खरगोन) के साथ सम्पन्न हुआ। श्री विवेक 2 जून को अमेरिका प्रस्थान करेंगे वहां वे इन्टेल (पोर्टलैंड) में प्रमुख एक्जीक्यूटिव के रूप में कार्यरत है।

सम्मान एवं पुरस्कार वितरण के साथ श्री हाटकेश्वर जयंती सम्पन्न

पीपलरावां। विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी नागरों के ईष्टदेव भगवान श्री हाटकेश्वर की जयंती को नागर परिषद अध्यक्ष पत्रकार श्री हरिनारायण नागर की अध्यक्षता एवं श्रम न्यायाधीश श्री प्रवीण कुमार त्रिवेदी इन्दौर के मुख्य आतिथ्य में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। प्रातः श्री हाटकेश्वर पर गो-दुग्धाभिषेक पश्चात आरती एवं प्रसाद वितरणोंपरांत हाटकेश्वर के मुखोटे की शोभायात्रा नगर में निकाली गई, जहां स्थान-स्थान पर भगवान की पूजन-आरती उतारी। शोभायात्रा नगर धर्मशाला में आकर महासभा में परिवर्तित हो गई। अध्यक्ष पत्रकार श्री नागर एवं मुख्य अतिथि श्रम न्यायाधीश श्री त्रिवेदी द्वारा भक्त नरसिंह के चित्र पर पूजनोपरांत श्री त्रिवेदी ने दीप प्रज्वलितकर श्री हाटकेश्वर के जयघोष के साथ समारोह का श्री गणेश किया। अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि का पुष्पहार से स्वागत एड्व्होकेट श्री सुशील नागर (सोनकच्छ), परिषद उपाध्यक्ष श्री त्रिभुवन लाल मेहता, कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र शुक्ल, सचिव श्री रमेशचन्द्र नागर, डॉ. श्री धर्मेन्द्र नागर (सोनकच्छ), श्री गोपालकृष्ण व्यास (इकलेरा माताजी) श्री चन्द्रकांत व्यास (दादाभाई) डॉ. श्री अशोक व्यास, पं. श्री अरुण कुमार त्रिवेदी, श्री सुरेशचन्द्र त्रिवेदी, श्री भेरूलाल मेहता, पत्रकार श्री प्रकाश नागर आदि ने किया। जबकि श्रीमती मीना त्रिवेदी (इन्दौर) का स्वागत श्रीमती राजेश्वरी नागर ने किया। श्री त्रिभुवनलाल मेहता द्वारा स्वागतो भाषणोपरांत परिषद् का प्रगति प्रतिवेदन अध्यक्ष श्री नागर ने प्रस्तुत किया जबकि वार्षिक आय-व्यय का वाचन कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र शुक्ल ने किया। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष डॉ. श्री कृष्णकांत त्रिवेदी की सामाजिक सेवाओं के उपलक्ष्य में मरणोपरांत उन्हें हार, शाल, श्रीफल, स्मृति-चिन्ह, प्रशस्ती-पत्र एवं नगद मुद्रा भेंट द्वारा सम्मानित कर उनके पुत्र चि. अरुण कुमार त्रिवेदी को प्रदान किये गये। प्रशस्ती-पत्र का वाचन श्री राघवेन्द्र मेहता ने किया। स्व. एड्व्होकेट श्री रामवल्लभ नागर की प्रेरणा से आयोजित प्रतिभा-प्रोत्साहन पुरस्कार श्री ब्रजगोपाल मेहता (स. आयुक्त झाबुआ), एड्व्होकेट श्री सुशील नागर (सोनकच्छ), श्री त्रिभुवनलाल मेहता, श्री वीरेन्द्र व्यास (शाजापुर), श्री गोपालकृष्ण व्यास (इकलेरा) एवं डॉ. श्री पूर्णानंद व्यास (उज्जैन) की ओर से क्रमशः कु. प्रज्ञा मेहता, कु. प्राची मेहता, कु. आकांक्षा नागर, कु. रूचि मेहता, कु. राधिका मेहता, चि. नयन नागर, कु. शुभांगी व्यास तथा एक सांत्वना पुरस्कार चि. शरद मेहता को अतिथियों ने पत्रकार श्री मनमोहन नागर के सहयोग से प्रदान किये। पुरस्कार वितरणोपरांत उपाध्यक्ष गोपाल कृष्ण व्यास एवं गीता भवन सोनकच्छ के प्रबंध ट्रस्टी डॉ. श्री धर्मेन्द्र नागर ने अपने उद्बोधन में परिषद् अध्यक्ष श्री हरिनारायण नागर के सफल नेतृत्व में विकसित नागर परिषद पीपलरावां की जानकारी दी तथा सभी सदस्यों के सहयोग की प्रशंसा की। मुख्य अतिथि श्रम न्यायाधीश श्री त्रिवेदी ने अपने उद्बोधन में मात्र 10 परिवार की इस छोटी सी परिषद द्वारा 10 वर्षों में 9 लाख रुपये के किये गये निर्माण कार्य एवं 5 लाख रुपये के निर्माणाधीन सभागृह को देखकर आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा यह परिषद प्रदेश की अन्य शाखाओं के लिये अनुकरणीय अनुकरणीय उदाहरण है। उन्होंने इस अवसर पर अपनी ओर से ग्यारह हजार रुपये की सहयोग राशि का चेक अध्यक्ष श्री नागर को हस्तगत कराया। समारोह में श्रीमती सविता नागर तथा श्रीमती रत्ना नागर (सोनकच्छ) के साथ ही स्थानीय शाखा डाकपाल श्रीमती शकुन्तला नागर, श्रीमती मनोरमा नागर, श्रीमती रमादेवी शुक्ल तथा श्रीमती ज्योती व्यास सहित लगभग सभी मातृशक्ति उपस्थित थी। महासभा का प्रभावी संचालन पत्रकार भूपेन्द्र नागर ने तथा आभार प्रदर्शन एड्व्होकेट श्री सुशील नागर ने किया। अंत में डॉ. श्री धर्मेन्द्र नागर (सोनकच्छ) की ओर से सहभोज का सभी नागरजनों ने आनन्द लिया।

❖ **हरिनारायण नागर (अध्यक्ष)**
नागर परिषद पीपलरावां

श्री नागर पुनः निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित

पीपलरावां। स्थानीय नागर धर्मशाला में भगवान श्री हाटकेश्वर की जयंती 8 अप्रैल 09 को नागर ब्राह्मण परिषद् शाखा पीपलरावां द्वारा श्रम न्यायाधीश श्री प्रवीण कुमार त्रिवेदी की अध्यक्षता में आयोजित महासभा में परिषद अध्यक्ष पद की प्रक्रिया जैसे ही परिषद सचिव श्री रमेशचन्द्र नागर ने प्रारम्भ की वैसे ही गीता भवन सोनकच्छ के प्रबंध ट्रस्टी डॉ. श्री धर्मेन्द्र नागर ने खड़े होकर सदन से अनुरोध किया कि वर्तमान अध्यक्ष पत्रकार श्री हरिनारायण नागर के नेतृत्व में जब यह परिषद निरंतर प्रगतिशील है तब निर्वाचन का कोई औचित्य ही नहीं रह जाता, अतः मैं पत्रकार श्री नागर का नाम अध्यक्ष पद के लिये आगामी तीन वर्षों के लिये पुनः प्रस्तावित करता हूं। इस पर सदन ने करतल ध्वनि से एक मत से श्री नागर पुनः अध्यक्ष पद के लिये निर्वाचित कर दिये गये। यद्यपि श्री नागर अपनी अस्वस्थता वश पद से मुक्ति चाहने हेतु अनुरोध करते रहे लेकिन उनकी बात पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। अंततः अध्यक्ष श्री नागर ने तत्काल अपनी नवीन कार्यकारणी हेतु पुनः यथावत श्री त्रिभुवनलाल मेहता को उपाध्यक्ष, श्री राजेन्द्र कुमार शुक्ल कोषाध्यक्ष एवं श्री रमेशचन्द्र नागर को सचिव नियुक्त कर दिया। उपस्थित सदस्यों ने नवीन पदाधिकारियों को पुनः निर्वाचित होने पर बधाई दी। उल्लेखनीय है कि श्री नागर विगत बारह वर्षों से सतत अध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित होते आ रहे है।

इन्दौर में हाटकेश्वर जयंति महोत्सव के साथ साधारण सभा की बैठक एवं निर्वाचन सम्पन्न

इन्दौर। अ.भारतीय नागर परिषद शाखा इन्दौर द्वारा दि. 8-4-09 को इष्टदेव भगवान हाटकेश्वर का पाटोत्सव मनाया गया। इसी दिन नागर परिषद की साधारण सभा का आयोजन भी किया गया। अपरान्ह सूरज नगर स्थित मन्दिर में भगवान हाटकेश्वर की पूजा अर्चना, अभिषेक किया गया। अभिषेक के पश्चात आरती व प्रसाद वितरण किया गया। अभिषेक व पूजन पं. श्री रमेश प्रसाद रावल व पं. विश्वनाथ व्यास द्वारा सम्पन्न कराया गया। अभिषेक में सर्वश्री आशीष त्रिवेदी, श्री व्रजेन्द्र नागर, श्री नीलेश नागर, श्री योगेश शर्मा आदि ने भाग लिया। मुख्य कार्यक्रम खजराना स्थित हाटकेश्वर मन्दिर पर प्रारंभ हुआ। अपरान्ह 4 बजे भगवान हाटकेश्वर का वैदिक विधि विधान के साथ पूजन अर्चन, अभिषेक सम्पन्न किया गया। पं. रमेश प्रसाद रावल, पं. विश्वनाथ व्यास, पं. उमाशंकर नागर, पं. दिनेश नागर ने पूजन अर्चन विधिपूर्वक सम्पन्न कराया रुद्राष्टाध्यायी से अभिषेक के उपरान्त भगवान का श्रृंगार किया गया तथा आरती की गई। प्रसाद वितरण सभी उपस्थित सदस्यों को किया गया। पूजा अर्चना में सर्वश्री ओमप्रकाश शर्मा, श्रीमती इन्दुबेन शर्मा, श्री अशोक पंचोली, श्रीमती उषा पंचोली, श्रीमती चारुमित्रा नागर व अन्य नागर समाज के सदस्यों ने भाग लिया।

सायं 7 बजे अखिल भारतीय नागर परिषद शाखा इन्दौर की वार्षिक साधारण सभा का आयोजन मंदिर के समीप स्थित पाटीदार धर्मशाला में किया गया। अध्यक्षता डॉ. महेन्द्र नागर ने की। वार्षिक रिपोर्ट निवृत्तमान अध्यक्ष पं. रमेश प्रसाद रावल द्वारा प्रस्तुत की गई। श्री रावल ने बताया कि एक निर्णय लिया गया है, इसके अनुसार दि. 13 जून को सामूहिक यज्ञोपवित का आयोजन किया जावेगा तथा 13-6-09 के अपरान्ह से 14-6-09 को नागर युवा परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जावेगा। हमारा निवेदन है इन आयोजनों को निर्वाचनोपरान्त नई कार्यकारिणी भी सम्पन्न करें। नव दुर्गा उत्सव 2008 के आय-व्यय का मुद्रित हिसाब श्री व्रजेन्द्र नागर द्वारा पढ़कर सुनाया गया जिसे सर्वानुमति से स्वीकार किया गया। डॉ. नरेन्द्र नागर (निर्वाचन अधिकारी) ने अ.भा. नागर परिषद के निर्वाचन की प्रक्रिया पूरी करते हुए निर्वाचित पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी की घोषणा की। डॉ. श्रीमती रेणुका मेहता ने विगत वर्ष की महिला मण्डल की रिपोर्ट प्रस्तुत की।नागर समाज में जयहाटकेश वाणी को सृजित करने वाली श्रीमती प्रभा शर्मा के स्वर्गवास से एक शून्य व्याप्त हो गया। वे अद्‌भुत समाजसेवी, मिलनसार व ऊर्जा की स्त्रोत थी। श्रीमती शारदा मण्डलोई एवं श्रीमती रेणुका मेहता ने उनके सम्बंध में अपने विचार रखे व उन्हें अप्रतिम समाज सेवी बताते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्री आशीष त्रिवेदी ने अ.भा. नागर परिषद शाखा इन्दौर के त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न कराने पर निर्वाचन अधिकारी डॉ. नरेन्द्र नागर का आभार माना।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र नागर ने आयोजन पर सन्तोष व्यक्त किया तथा नवनिर्वाचित प्रतिनिधियों को नई ऊंचाइयां देने की प्रेरणा दी। हाटकेश्वर जयन्ती तथा अ.भा. नागर परिषद शाखा इन्दौर की वार्षिक बैठक के सूत्रधार श्री आशीष त्रिवेदी ने सभी का आभार माना। जनगणमन (राष्ट्रगीत) के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। इस वर्ष भी उपस्थित सदस्यों के लिये भोजन की व्यवस्था श्रीमती माणक बेन भट्ट एवं परिवार द्वारा की गई। जिसका यह पांचवा वर्ष है, सभी ने उन्हें पुष्प-हार पहनाकर धन्यवाद दिया गया। **-व्रजेन्द्र नागर**

दुनिया के सारे 'अलंकरण' से बढ़कर है 'आशीर्वाद'

भारतीय समाज में सम्मान एवं अलंकरण का बड़ा महत्व है तथा इन अलंकरणों को पा जाने वाले को सम्मान के साथ देखा जाता है लेकिन मैंने पाया है कि 'आशीर्वाद' से बढ़कर कोई अलंकरण इस दुनिया में नहीं है। 'आशीर्वाद' में बड़ी ताकत होती है। खासकर बुजुर्गों तथा अपने माता-पिता से प्राप्त आशीर्वाद में। आशीर्वाद प्राप्त करने के दो ही तरीके हैं सम्मान और सेवा। तथा सम्मान की अपेक्षा 'सेवा' से पाए गए आशीर्वाद ज्यादा कारगर होते हैं। मैंने समाज में कई व्यक्तियों को देखा है जिन्होंने अपने माता-पिता की अच्छी सेवा की, उनकी इच्छाओं की कद्र की। उन्हें बाद में सुखमय एवं शांतिमय जीवन की प्राप्ति हुई। वैसे दुनिया के कोई भी माता-पिता खराब व्यवहार के बावजूद अपनी संतान को श्राप नहीं देते। न ही सामान्य अवस्था में उनके व्यवहार पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इन सबके बावजूद अपने माता-पिता की इच्छानुसार चलने वाले तथा उनकी भावनाओं का सम्मान करने वाली संतान को जो शांति, सुख एवं सम्पन्नता प्राप्त होती है, वह अवहेलना एवं अवज्ञा करने वाली संतानों को प्राप्त नहीं होती। माँ का व्यवहार तो अपनी कपूत संतानों के प्रति भी सहृदयता का रहता है, किन्तु पिता इस मामले में तटस्थ रहते हैं। अतः मेरा उन सभी संतानों को संदेश है कि माता-पिता भगवान की दी हुई अमूल्य धरोहर है इसका आभास उनके न होने के बाद होता है। अतः उनकी मौजूदगी में उनकी सेवा एवं सम्मान के माध्यम से दुनिया का सबसे बड़ा अलंकरण 'आशीर्वाद' प्राप्त कर लो तथा अपने जीवन को शांतिमय, सुखमय बनाकर उसकी सार्थकता सिद्ध कर लो। माता-पिता की अवहेलना करने वाली संतान को न समाज माफ करता है न भगवान।

❖ संगीता शर्मा

आओ
एक नई दुनिया बसाएं
अभी भी समय है।
दूर बहुत दूर
कहीं सितारों से आगे,
समुद्र में तैरते
लहरों से आगे, बहुत आगे।
मुमकिन है कि हम डूब जाएं
राह में।
यह भी संभव है
कि हम अपने सपनों के देश
में पहुंच जाए।
ठीक है हम बहुत कुछ
खो चुके हैं,
लेकिन शेष भी तो
काफी बचा है
चाहे बांहों में वह शक्ति नहीं,
जो पहले थी,
जब हम जमीन-ओ-आसमां
एक कर देते थे।
पर आज भी हमारे हौंसले
बुलंद है,
चाहे किस्मत व काल के
थपैड़ो से
कुछ कमजोर हो गए है,
फिर भी
दिल में उत्कट उमंगे तो है।
फिर भरसक प्रयत्न करें
खोजें एक रास्ता और
अपने ध्येय बिन्दु की ओर
निरंतर बढ़ें।
हम हार न माने कभी भी।
पुज्यनीय 'बेन' को
सादर श्रद्धांजलि

❖ संगीता-दीपक शर्मा

व्यवस्था बनाने में सहयोग करें

मासिक जय हाटकेश वाणी के पाठकों से विनम्र निवेदन है कि वे अपनी समस्त प्रकाशन सामग्री प्रतिमाह की 25 तारीख तक अवश्य भेज देवें। अनेक पाठक एवं संवाददाता अत्यंत विलंब से एक-दो तारीख तक मेटर भेजते रहते हैं जबकि हमारा प्रयास यह है कि सम्बंधित माह की ताजी सामग्री एवं विवरण आगामी माह की पत्रिका में छप जाना चाहिए। अतः भविष्य में तय करें कि प्रतिमाह 25 तारीख तक अपने मेटर एवं फोटो अवश्य भेज देवें। विलम्ब से प्राप्त सामग्री अगले माह की किताब में ली जा सकेगी।

-सम्पादक

सदस्यता आवेदन पत्र

मैं.....

पूरा पता (पिनकोड सहित).....

.....

मासिक जय हाटकेश वाणी का तीन वर्ष हेतु सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित शुल्क 250/-रु. नगद/चैक/ ड्राफ्ट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते पंजाब नेशनल बैंक A/C नं. 0212002100245085 में जमा किया है।

श्रीमान संपादक महोदय

मासिक जयहाटकेश वाणी

20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर

फोन. 2450018 फैक्स-2459026 मो.9425063129

Email-manibhaisharma@gmail.com
jayhotkeshvani@gmail.com

धारावाहिक/सांईबाबा के परम भक्त काका साहेब

निष्ठा और सब्र से बन जाते है सारे काज

काका साहेब दीक्षित

काका को पूर्ण विश्वास हो गया था कि बाबा उनकी हर प्रकार से रक्षा करेंगे और बाबा के श्री मुख से निकला हर शब्द शाश्वत् सत्य होता है। इस विश्वास को ही निष्ठा कहते हैं। बाबा भक्तों से दो आने (सिक्के) मांगा करते थे। वे सिक्के हैं (1) श्रद्धा या निष्ठा और (2) सब्र (सबूरी/साहस/धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा)। दीक्षित ने भी श्रद्धा और सबूरी के ये दो सिक्के बाबा के चरणों में अर्पित किए थे। फिर भी कई अवसरों पर बाबा स्वयं इन विशेषताओं को और मजबूत करते थे। एक बार दीक्षित बाबा को एक हार व 25/- रुपये भेंट देने के विचार से गए। वहां पहुंच कर पहले उन्होंने केवल हार भेंट किया। तब बाबा बोले कि 'यह हार 25/-रुपये की मांग कर रहा है' काका समझ गए कि अंतर्यामी बाबा सब के हृदय के भाव जानते हैं। एक अन्य अवसर पर अपने घर में पूजा करते समय वे बाबा को नैवेद्य में पान भेंट करना भूल गए। बाद में जब वे बाबा के पास गए तो बाबा ने उनसे पान ही मांगा। तब दीक्षित समझ गए कि बाबा उनका हर समय ध्यान रखते हैं।

दीक्षित एक उदार हृदय वाले, शिष्ट व भले आचरण वाले व्यक्ति थे। वे कभी भी किसी की निन्दा, चुगली या बदनामी नहीं करते थे। एक बार किसी अवसर पर उन्होंने भगवान ईसा मसीह की निन्दा की। कुछ देर बाद जब वे बाबा की सेवा करने पहुंचे तो बाबा उनसे गुस्से में बोले, 'तुम मालिश मत करो।' तुरंत ही काका को अपनी गलती का अहसास हो गया। उन्होंने प्रण किया कि भविष्य में वे ऐसा गलत काम कभी नहीं करेंगे। एक बार दीक्षित ने रात का भोजन न खाने का प्राण किया। बाबा ने कभी भी व्रत रखने की सहमति नहीं दी। उन्होंने दीक्षित को रात का भोजन खाने का आदेश किया। तब दीक्षित ने रात को व्रत रखने का विचार त्याग दिया। जब बाबा स्वयं दीक्षित के तुच्छ व तामसिक विचारों को नष्ट करने के लिए तत्पर थे तो उन्हें व्रत रखने की क्या जरूरत थी? सन् 1918 के बाद भी दीक्षित ने बाबा को अपने समीप ही महसूस किया। वे सदैव बाबा से प्रार्थना करते थे कि उन्हें इतनी शक्ति मिले, ताकि उनके मन में कभी भी बुरे विचार न आएं, वे इधर-उधर की व्यर्थ बातों से बचें व सदैव बाबा के बताए रास्ते का अनुसरण करें।

बाबा केवल काका का ही नहीं बल्कि उनके रिश्तेदारों का भी ध्यान रखते थे। एक दिन काका को नागपुर से पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि उनके छोटे भाई की हालत बहुत खराब थी। तब काका ने बाबा से कहा, 'बाबा, भाई बहुत बीमार है। लेकिन मैं उसकी किसी प्रकार से भी मदद नहीं कर पा रहा हूं।' बाबा बोले, 'मैं ध्यान रख सकता हूं।' बाबा के इन शब्दों का अर्थ काका नहीं समझ पाए। उसी समय नागपुर में एक साधु ने जाकर काका के भाई को बिलकुल स्वस्थ कर दिया। उस साधु ने बाबा के ही शब्द दोहराए यानि 'मैं ध्यान रख सकता हूं' तब काका को विश्वास हो गया कि बाबा को 1000 मील पर होने वाली घटना का भी आभास होता था तथा जरुरत अनुसार हर चीज की पूर्ति बाबा अपनी दिव्य शक्ति से कर देते हैं, चाहे वह उनका शिष्य हो या फिर उनका रिश्तेदार हो। दीक्षित कोई भी महत्वपूर्ण कार्य करने से पूर्व बाबा से सलाह अवश्य लेते थे और बाबा के आदेशानुसार ही कार्य करते। आम व्यक्ति के लिए बाबा द्वारा बताया तरीका अजीब हो सकता है, लेकिन निष्ठापूर्वक उसका पालन करने से कार्य अवश्य सिद्ध होता है। एक अवसर पर बाबा ने हंसी-मजाक करते हुए अपने आज्ञाकारी शिष्य दीक्षित की परीक्षा इस प्रकार ली- एक दिन मस्जिद में अत्यन्त दुर्बल, बूढ़ा और मरने जैसी हालत वाला बकरा आया। इस पर बाबा ने कहा- बाबा (माले गांव के फकीर पीर मोहम्मद उर्फ बड़े बाबा को) एक ही बार में इस बकरे को काट दो। बड़े बाबा (बकरे को दया की भावना से देखते हुए) इसकी बलि चढ़ाना व्यर्थ ही है। ऐसा कहकर वे मस्जिद से बाहर चले गए। बाबा- शामा, तुम इसे काटो। राधाकृष्ण माई के घर से एक चाकू ले आओ। (राधाकृष्ण माई ने चाकू भिजवा दिया। लेकिन जब उन्हें कारण का पता चला तो उन्होंने चाकू वापस मंगवा लिया।) शामा- मैं घर जाकर चाकू ले आता हूं (शामा बहुत देर तक मस्जिद में वापिस न लौटे) तब बाबा ने दीक्षित से- तुम चाकू लाकर इसे काटो। दीक्षित साठे वाड़े से चाकू ले आए। दीक्षित- बाबा, क्या मैं इसे मार डालूं? बाबा- हां। दीक्षित चाकू लेकर हाथ ऊपर उठाकर बाबा की आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगे। बाबा- अब क्या विचार कर रहे हो? मारो। दीक्षित जब बाबा की आज्ञा का पालन कर चाकू नीचे मारने ही वाले थे कि बाबा बोले- रुको। जानवर को वहीं रहने दो।

मैं स्वयं ही बलि चढ़ाने का कार्य करूंगा, लेकिन मस्जिद में नहीं। तब बाबा बकरे को उठाकर तकिये के पास ज्यों ही ले जाने लगे, तभी बकरा रास्ते में गिर कर मर गया।

❖ प्रस्तुति-श्रीमती शारदा मंडलोई

हाटकेश्वर जयंती धूमधाम से मनाई गई

जयपुर, जयपुर में विद्यमान गुजराती नागर ब्राह्मण समाज द्वारा दिनांक 8 अप्रैल को भगवान श्री हाटकेश्वर महादेव की जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। कार्यक्रम में प्रातः कालीन पूजा व अभिषेक एवं सायंकालीन आरती का आयोजन किया गया। सायंकाल 6 बजे नागरवाड़ा का चौक गणगौरी बाजार में हाटकेश्वर महादेव मंदिर में नागर समाज द्वारा आरती की गई, तत्पश्चात बोरडी के कुएं का रास्ता, गणगौरी बाजार जयपुर में स्थित हाटकेश्वर मंदिर में आरती का आयोजन किया गया, जिसमें गुजराती नागर ब्राह्मण समाज के करीब 400 सदस्यों द्वारा जोश, श्रृद्धाभक्ति पूर्वक भाग लिया गया। समारोह में समाज के वरिष्ठ एवं सम्मानीय सदस्यों की उपस्थिती प्रेरणा दायक एवं मार्गदर्शन से ओतप्रोत थी। समाज के वरिष्ठ सदस्य/संरक्षक जस्टिस भी विनोद शंकर दवे ने समाज के कार्यक्रमों में युवाओं को आगे आने एवं उन्हें जिम्मेदारी संभालने हेतु आवाह्न किया एवं इस कार्यक्रम को अच्छी प्रकार करने के लिए किये गये प्रयासों की सराहना की एवं सभी को इस अवसर पर शुभकामनाएं दीं। इसी प्रकार समाज के वरिष्ठ सदस्यों जिनमें डॉ. पुरुषोत्तम नागर, डॉ. योगेश भट्ट, डॉ. नानावटी, श्री उमाशंकरजी नागर, श्री डी.के. नागर श्री कुमारेश बुच समारोह में उपस्थित रहें। श्री कुमारेश बुच ने आरती कार्यक्रम का संचालन किया साथ ही भजन कीर्तन भी कराए एवं उपस्थित समाज बंधुओं को बताया कि आने वाले समय में हमारा नागर ब्राह्मण समाज भी अन्य समाजों की तरह अपनी उपस्थित दिखाएगा, इसके लिये समाज के सभी सदस्य अपना-अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें एवं समाज के वरिष्ठ सदस्यों का मार्गदर्शन सदैव उपलब्ध रहेगा। आरती के पश्चात प्रसादी का कार्यक्रम रहा जिसमें करीब 400 सदस्यों ने प्रसादी भोजन किया, जिसमें पुरुष, महिलाओं एवं बच्चों का पूर्ण सहयोग रहा। कार्यक्रम की सफलता में सभी सक्रिय रहे, विशेष रूप से श्री उपेन्द्र भार्दू दीवेटिया, श्री अजय कुमार नागर, श्री कुमारेश एस.बुच, श्री महेन्द्र नागर, श्री राजेश नागर, श्री पुष्पेन्द्र कुमार नागर, श्री सतीश दवे, श्री विनोद प्रकाश नागर, श्री आनन्द दशोरा, श्री संजय नागर, श्री विपिन कुमार दवे, श्री अजय नागर, श्री विशाल नागर, श्री राशि नागर, श्री विभव भट्ट कार्यक्रम श्री हाटकेश्वर महादेव के जय उद्घोषों के साथ सानंद सम्पन्न हुआ।

❖ **वीरेन्द्र नागर, जयपुर**

शुकतीर्थ में भव्य प्रतिष्ठित आयोजन में पं. श्री ब्रजकिशोरजी नागर ने प्रवचन गंगा बहायी

शुकतीर्थ (मुजफ्फर नगर)। शिव जटा विहारिणी भगवती भागीरथी गंगा के तट पर श्री शुकदेवजी की साधना स्थली शुकतीर्थ के हनुमद्धाम में गोलोकवासी प्रातः स्मरणीय श्री चक्रजी महाराज की अन्तः प्रेरणा से परमपूज्य आचार्य स्वामी भागवतानन्द सरस्वतीजी महाराज की अध्यक्षता में हनुमत जयन्ती महोत्सव एवं परमपूज्य पं. श्री ब्रजकिशोरजी नागर के श्री मुख से श्रीमद् भागवत कथा एवं 21 कुण्डीय सुन्दर काण्ड महायज्ञ तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमो का आयोजन दिनांक 1 से 8 अप्रैल 2009 के दौरान सम्पन्न हुआ।

यह समस्त नागर समाज के लिए गौरव का विषय है कि घुंसी (शाजापुर) के निवासी पं. श्री ब्रजकिशोरजी नागर ने देश के जाने-माने संतों के साथ भव्य आयोजन में शिरकत की बल्कि अपने प्रवचनों के माध्यम से सबको मुग्ध भी किया। श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा यज्ञ के साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम (रासलीला आदि) श्री राम नवमी महोत्सव, श्री शुकतीर्थ परिक्रमा, 21 कुण्डीय सुन्दरकाण्ड महायज्ञ, हनुमत चरणाभिषेक के साथ स्वास्थ्य शिविर भी आयोजित किए गए। श्री ब्रजकिशोरजी नागर के प्रवचन कार्यक्रम कई स्थानों पर सम्पन्न हो चुके हैं तथा आप दिन प्रतिदिन लोकप्रियता की ओर अग्रसर है।

जम्मूतवी से बधाई

सभी नागरजनों को हाटकेश्वर जयंति की शुभकामनाएं टेलीग्राम के माध्यम से भेजी है श्री बालकृष्णजी नागर जम्मूतवी ने।

सेनापति ने बीस व्यक्तियों को घर में छिपा लिया था

हालूजी हाड़ा द्वारा वंश रक्षा एवं मेवाड़ में भेजना- दशपुर में जिस समय युद्ध हुआ उस समय हालूजी हाड़ा यहां के सेनापति थे तथा दशोरा जाति की रक्षा का भार इन्हीं पर था। इनके वंशजों को इसके एवज में अस्सी हजार की जागीर भी दी गई थी।

पहले जिस हालूजी हाड़ा का वर्णन आया है वह संभवतः इन्हीं के वंशज थे जिनको यह जागीर दी गई थी। युद्ध के समय हालूजी हाड़ा बड़ी वीरता से लड़े तथा इस कत्लेआम के समय इन्होंने दशोरा ब्राह्मणों के वंश को समूल नष्ट होने से बचाने के लिए इस वंश के बीस व्यक्तियों को अपने घर में घास की गंजी में छिपाकर बचा लिया तथा यह विचार किया कि चित्तौड़ में हिन्दवा सूर्य का राज्य है। मैं इन्हें पत्र लिखकर उनकी शरण में भेज दूं तो वे इनकी रक्षा करेंगे। ऐसा सोचकर हालूजी ने मेवाड़ के राणा को एक पत्र लिखा, 'यह दशपुर राज्य यवनों का हो गया है, सारे ब्राह्मण एक साथ मारे जा चुके हैं। अब यवन दशपुर के स्वामी हो गये हैं। अब इन बचे हुए प्राणों की आप रक्षा करें।' ऐसा लिखकर आगे उसने दशपुर का इतिहास लिखते हुए लिखा कि, 'इन ब्राह्मणों के 12 गोत्र हैं तथा जो बचे हुए स्त्री पुरुष हैं वे भिन्न-भिन्न गोत्रों के हैं।' यह लिखकर उसने इनके बारह गोत्र इनकी बारह देवी के नाम अवंटक, प्रवर, गण, वेद, शाखा, यक्ष आदि का वर्णन लिख भेजा तथा यह भी लिखा कि, 'दस बालक काशी पढ़ने गये हैं। भगवान शिव उनकी रक्षा करें। यहां से जो आ रहे हैं उनमें दस लड़कियां कुंआरी हैं, तथा पांच पुरुष शादीशुदा हैं जिनकी पत्नियां साथ हैं। इस प्रकार इन बीस व्यक्तियों को आपकी शरण में भेज रहा हूं।' एक विवरण में यह भी मिलता है कि हालूजी हाड़ा ने पांच जोड़ों और तीन कुंआरी कन्याओं को बचाया था तथा सात दशोरा कन्याएं शिवना नदी में स्नान को गई थीं उन्हें एक धोबी ने कपड़े धोते हुए कपड़ों की आड़ में इधर-उधर छिपा दिया था। हालूजी हाड़ा ने इन बीसों को अपने पहाड़ी ग्राम में ले जाकर गुप्त रूप से रख दिया। इसी बीच हाड़ा राय ने गुप्त रूप से काशी समाचार भेजकर विद्याध्यन कर रहे दस व्यक्तियों को भी बुला लिया तथा आक्रमण का समाचार भी भेज दिया। जब ये व्यक्ति दशपुर पहुंचे तो इनका विवाह इन दसों कन्याओं के साथ कर दिया। यह विवाह माघ शुक्ल पंचमी, बसन्त पंचमी के दिन यवनों के भय के कारण एक गेहूं के खेत में सम्पन्न कराया गया। अपने परिवार के मृतकों को पिंडदान देने के बाद यह विवाह सम्पन्न कराया। इस समय कुल तीस व्यक्ति थे। इन विद्वानों के बारे में हाड़ाराय ने फिर चित्तौड़ के राणा को लिखा कि, ये सब मेरे प्राणों से भी प्यारे हैं। इनकी हर प्रकार से रक्षा करना। इनको प्राणदान देना, ऐसी मेरी प्रार्थना है। ये सब ब्राह्मण सब गुणों की खान हैं। ये रखने योग्य हैं। ये राजा के घर की शोभा बढ़ाने वाले हैं। ये चारों वेद और छः शाखाओं के जानने वाले हैं। ये छः दर्शन और अठारह ही पुराणों के ज्ञाता हैं। आदि। इन्होंने भी दशपुर से रवाना होते समय दशपुर न जाने एवं शिवना नदी का जल न पीने की प्रतिज्ञा ली। इस प्रकार इस जाति का मन्दसौर से हमेशा के लिए सम्बंध विच्छेद हो गया। मेवाड़ के महाराजा ने जिन दशोरा ब्राह्मणों को शरण दी वे मेवाड़ में ही बस गये। आज भी यह छोटी सी जाति यहां विद्यमान है जिनके कुल मिलाकर इस समय 272 परिवार हैं जिनकी जनसंख्या केवल 1608 है। ❖ **संकलन-श्रीमती शीला दशोरा**

रंग बदलता दुख

लघु कथा

हरिया अपने दोस्त के लड़के की शादी में गया था. और पास के गांव से वापस लौट रहा था। वह बहुत खुश था। शादी बहुत धूम-धाम से हुई थी और उसने खूब छककर आनन्द लिया था। उसका गांव सड़क किनारे था। ग्वाले गांव की गाय, भैंस, बकरियां अधिकतर इसी सड़क के आसपास चराते रहते थे। बस से उतरकर हरिया यह देख कर सन्न रह गया कि उसकी भैंस किसी वाहन से टकरा कर गिरी पड़ी थी। उसकी आंखों में आंसू आ गए। भाव विह्वल होकर वह दौड़ता हुआ भैंस के पास पहुंचा। कभी भैंस के कान सहलाता फिर सींग। फिर इतने बड़े नुकसान को सह न पाने के कारण दुःखी होकर भैंस का मुंह अपने हाथों में ले लिया और फूट-फूट कर रोने लगा। तभी उसका बड़ा बेटा उसके पास आया और बोला-बापू रो मत। इस भैंस को तो मैंने परसो बेच दिया है। हरिया के चेहरे के भाव तत्काल बदल गए। वह भैंस को छोड़कर तत्काल उठ खड़ा हुआ। धोती के पल्ले से अपने गालों पर लुढ़क आए आसुओं को पोंछा और फिर से हर्षित होकर शादी में हुई मौजमस्ती के किस्से अपने बेटे को सुनाता हुआ घर की तरफ चल दिया।

आशा नागर
सी-12/9, ऋषि नगर, उज्जैन
फोन 0734-2521157

मासिक जय हाटकेश वाणी प्रकाशन के उद्देश्य

1. दिवंगत परिजनों की स्मृति को अक्षुण्ण रखने का प्रयास। पुण्यतिथि के विज्ञापनों का निःशुल्क प्रकाशन तथा वार्षिक कैलेण्डर में दिनांक के साथ (परिवार की अमूल्य धरोहर) दिवंगत परिजनों के फोटो का प्रकाशन।

2. सुयश- समाज के प्रतिभाशाली युवक-युवतियों का उत्साहवर्द्धन। उनकी उपलब्धियों का फोटो सहित प्रकाशन कर ख्याति को सम्पूर्ण समाज तक पहुंचाना।

3. बधाई- छोटे बच्चों के जन्मदिन की शुभकामनाएं फोटो सहित एवं विवाह वर्षगांठ की बधाई का निःशुल्क प्रकाशन। बधाई के माध्यम से सम्पर्क बढ़ाने एवं संबंध नियमित बनाने का प्रयास।

4. विवाह योग्य युवक युवतियों का विवरण फोटो सहित निःशुल्क प्रकाशन। योग्य एवं अच्छे विवाह सम्बंध बनाने का प्रयास।

5. लेखकों को प्रोत्साहन- समाज के सभी वर्ग खासकर महिलाओं एवं बच्चों को लेखन के क्षेत्र में प्रोत्साहन का प्रयास उनकी रचनाओं का फोटो सहित प्रकाशन किया जाकर।

सम्पर्क सेतुः- समस्त नागर बहुल नगरों एवं कस्बों की टेलीफोन डायरेक्टरी का प्रकाशन कर समाज के बीच संबंधों को बढ़ाने का विनम्र प्रयास। निःशुल्क या रियायती सेवा देने वाले प्रोफेशनल की हेल्पलाईन का प्रकाशन।

7. गतिविधियों को प्रोत्साहन- नागर समाज में विभिन्न शहरों में चल रही गतिविधियों का फोटो सहित प्रकाशन ताकि जिन नगरों, कस्बों में गतिविधियां शून्य है वहां भी स्नेह मिलन समारोह आयोजित हो सके। समारोह सम्बंध बढ़ाने का साधन है तथा समारोह के लिए जागरुकता एवं उपयुक्त माहौल, सिलसिले की आवश्यकता है। समाज को जागरुक बनाने का प्रयास, अच्छी बातों को प्रोत्साहन, विद्यार्थियों को प्रतिभाशाली बनाना तथा सम्पर्क- सम्बंध बढ़ाकर समाज को लाभान्वित करने के उद्देश्य से पत्रिका का प्रकाशन शुरु किया गया है। अच्छी बातों को बढ़ावा एवं कुरितियों को खत्म करने का प्रयास। समाज सुधार का प्रयत्न यदि किसी संगठन के माध्यम से हो या किसी परिवार या व्यक्तिगत उसका स्वागत किया जाना चाहिए। आज परिवारों में आपसी सामंजस्य, उनमें सामाजिक चेतना बढ़ाने तथा आध्यात्मिक विकास की आवश्यकता है, जो हम इस प्रकाशन के माध्यम से कर सकते हैं। ❖ **सम्पादक**

ईश्वर से साक्षात्कार

एक बार कुछ अंग्रेज पादरी एक पत्रकार को अपने साथ लेकर महर्षि रमण के पास पहुंचे। उन्होंने महर्षि से कहा, 'कहा जाता है कि आप घंटों ईश्वर का साक्षात्कार करते हैं। आज हम सभी इस बात को स्वयं देखने आए हैं कि आप ईश्वर से कैसे मिलते हैं? यदि आपकी ईश्वर से साक्षात्कार की बात निराधार हुई तो यह पत्रकार आपके चमत्कार का भंडाफोड़ कर देगा।

उनकी बात सुनकर महर्षि रमण मुस्कुराए और बोले, 'आप सवेरे मेरे साथ चलकर स्वयं भी ईश्वर का साक्षात्कार कर सकते हैं।' पादरी व पत्रकार महर्षि रमण को इतनी सरलता से यह कहते देख हैरान रह गए। वह सुबह उनके पास आने की बात कहकर लौट गए। रात भर उन सभी में से किसी को भी नींद नहीं आई और वे पूरी रात आपस में यही विचार-विमर्श करते रहे कि महर्षि कैसे उनका ईश्वर से साक्षात्कार कराएंगे? अगले दिन सवेरा होते ही वे महर्षि रमण के आश्रम में पहुंच गए। महर्षि रमण पूजा-अर्चना के बाद पादरियों को साथ लेकर जंगल की ओर चल दिए। जंगल में वह नदी किनारे स्थित एक झोपड़ी में पहुंचे। वहां लेटे हुए एक कुष्ठ रोगी को उन्होंने प्रेम से उठाया। उसके शरीर पर औषधि युक्त तेल की मालिश की। मालिश के बाद उसे नहलाया, उसके कपड़े बदले। चूल्हा जलाकर उसके लिए दलिया बनाया और बड़े प्रेम से खिलाया। फिर उन्होंने पास ही चटाई पर बैठे पादरियों व पत्रकार से कहा, 'मैं इस तरह प्रतिदिन ईश्वर की पूजा करता हूं। उससे बातें करता हूं। क्या आपको लगता है कि मैं कोई पाखंड करता हूं?'

पादरी तथा पत्रकार महर्षि रमण के चरणों में गिर गए। पत्रकार ने इंग्लैंड से प्रकाशित एक समाचार पत्र में अपने संस्मरण में लिखा, 'उस दिन हम सबको यह लगा कि हम ईसा-मसीह के साक्षात् दर्शन कर रहे हैं।'

अल्प बचत योजनाए यानी शुद्ध फायदा

अपनी गाढ़ी मेहनत की कमाई को वहां लगाए जहां वह सुरक्षित हो, और दे सबसे ज्यादा फायदा

आयकर में छूट, आपकी रकम सुरक्षित, अधिक ब्याज

योजनाए- (१) राष्ट्रीय बचत पत्र N.S.C. (२) किसान विकास पत्र (३) मासिक आय योजना ८ प्रतिशत ब्याज (४) सावधि जमा (५) वरिष्ठ नागरिक ५ वर्षीय खाता ९ प्रतिशत ब्याज

अधिकृत एजेन्ट- कृष्णकान्त शुक्ल
सी-५९ अभिलाषा कालोनी, देवास रोड,
उज्जैन फोन २५११८८५

एक संक्षिप्त परिचय योगेन्द्र त्रिवेदी

उज्जैन में 8 अप्रैल को आयोजित हाटकेश्वर जयंति उत्सव के दौरान हुए पदाधिकारियों के निर्वाचन में श्री योगेन्द्र त्रिवेदी सर्वानुमति से अध्यक्ष मनोनित हुए। श्री त्रिवेदी का जन्म सन् 6 सितम्बर 1954 को देवास जिले के ग्राम पीपलरावां में स्व. श्री सत्यनारायण-पुष्पादेवी त्रिवेदी के यहां हुआ था। 1977 में गारमेंट एक्सपोर्ट कं. में स्टोर्स इंचार्ज के रूप में शुरूआत करते हुए श्री त्रिवेदी इस कंपनी में सहायक महाप्रबंधक जैसे वरिष्ठ पद तक पहुंचे और इसके साथ ही समाज की सभी गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से हिस्सा लेते रहे ना सिर्फ अपने शहर बल्कि प्रदेश से बाहर मुम्बई, जुनागढ़, अहमदाबाद एवं अन्य शहरों में भी समाज के कार्यक्रमों में बढ़चढ़ कर शरीक हुए। साथ ही उज्जैन में गत वर्षों में आयोजित परिचय सम्मेलन, सामूहिक विवाह एवं अन्य वार्षिक उत्सवों में सक्रिय योगदान दिया। (लगभग 22 वर्षों से समाज के कार्यों में भागीदारी निभाने वाले श्री त्रिवेदी का विवाह 1978 में शाजापुर निवासी स्व. श्री भगवानदासजी नागर की सुपुत्री सौ. कृष्णा के साथ हुआ था। इनकी दो पुत्रियां अर्चना-दुमित दुबे एवं अपर्णा-हिमांशु व्यास है व पुत्र अर्पित त्रिवेदी है जो फिलहाल एयरटेल कं. में सिनियर कार्पोरेट ऑफिसर के पद पर कार्यरत है।) श्री त्रिवेदी के अध्यक्ष मनोनयन पर श्री नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास हरसिद्धि दरवाजा के समस्त ट्रस्टियों सहित अन्य नागर समाज संस्थाओं ने बधाई प्रेषित की है।

❖ पं. रामरतन शर्मा, उज्जैन

झाबुआ में हाटकेश्वर जयंति महोत्सव की धूम

झाबुआ। प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी नागर ब्राह्मण परिषद् द्वारा 16 वां हाटकेश्वर जयन्ति महोत्सव बुधवार 8 अप्रैल को श्री गायत्रीमाता मन्दिर में नव प्रतिष्ठित स्फटिक महांकाल मन्दिर पर झाबुआ, पिटोल एवं मेघनगर के समाजजनों ने धुमधाम से मनाया। सर्व प्रथम इष्टदेव का लघुरुद्राभिषेक करवाया गया लघुरुद्राभिषेक की जजमानी लाभ समाज सचिव श्री नारायण प्रसादजी नागर, श्री द्विजेन्द्रजी व्यास, श्री पुष्पेन्द्रजी नागर द्वारा लिया गया। लुघरुद्राभिषेक पं. श्री रमेशजी उपाध्याय, पं. श्री कैलाशजी त्रिपाठी, पं. श्री जनार्दनजी शुक्ला, पं. श्री जेमिनिजी शुक्ला के सानिध्य में विधि विधान से सम्पन्न करवाया गया। लघुरुद्राभिषेक के पश्चात महाआरती की गई एवं समाजजनों हेतु सहभोज का आयोजन रखा गया जिसमें समाज के 135 सदस्यों ने भाग लिया, महा आरती का लाभ समाज के मार्ग दर्शक श्री बी.जी. मेहता एवं समाज के वरिष्ठों ने लिया। कार्यक्रम में समाज की कार्यकारिणी के संरक्षक श्री घासीरामजी श्री पुनमचन्द्रजी नागर, परामर्शदाता श्री लक्ष्मीकान्तजी नागर, अध्यक्ष श्री राजेशजी नागर, उपाध्यक्ष श्री सुभाषजी नागर, स्वागताध्यक्ष श्री विट्ठललालजी नागर, श्री हरिविट्ठलजी, कोषाध्यक्ष श्री देवेन्द्र कोठारी, महिला समिति की अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा कोठारी सहित समाज की झाबुआ, पिटोल, मेघनगर की समस्त महिलायें, पिटोल के अध्यक्ष श्री रामेश्वरजी नागर सचिव श्री बालकृष्णजी नागर, सदाशिवजी नागर, श्री प्रकाशचन्दजी नागर, मेघनगर झाबुआ-पिटोल समाज के नवयुवक मंडल के अध्यक्ष श्री किशन नागर ने अपनी पूरी कार्यकारिणी के साथ कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दिया।❖ **श्रीमती लीना-राजेश नागर**

सभी समाजजन कार्यकारिणी के सहयोगी बनें...

इन्दौर। अपने इष्ट देव श्री हाटकेश्वर भगवान की जयन्ती के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं। अ.भा. नागर परिषद इन्दौर शाखा की वार्षिक साधारण सभा भी इसी अवसर पर आयोजित की गई। इस उपलक्ष्य में आगामी कार्यक्रमों के लिये हमने नई कार्यकारिणी का भी चुनाव किया है। वैसे तो सभी सदस्य एक परिवार जैसे मिलकर आत्मीयता से हमेशा काम कर रहे हैं, पर एक सिस्टम या पद्धति से काम करने के लिये कार्यकारिणी समिति बना ली जाती है। इसका अर्थ यह नहीं होता कि, जो सदस्य कार्यकारिणी में आये है वे ही सब कुछ है सब काम, आयोजन करेंगे- यह तो एक व्यवस्था बनाना पड़ती है। हर एक सदस्य हमारे लिये उतना ही आवश्यक है महत्वपूर्ण है। सबके सहयोग के बिना तो कुछ काम हो ही नहीं सकता। पिछले नौ-दस वर्षों में भी सबके सहयोग के लिये हार्दिक धन्यवाद देती हूं व आभार मानती हूं। आगे भी सब मिलकर, समाज के कार्य को आगे बढ़ायेंगे व ज्यादा से ज्यादा सहयोग करेंगे व सफल होंगे ऐसी भगवान हाटकेश से प्रार्थना करती हूं। इन्दौर शहर इतना विस्तृत हो चुका है कि, पहले वाली, किसी बात से तुलना करना बेकार है परिवार में सभी की दिनचर्या, व्यस्तता भी बिलकुल बदल चुकी है। 12-15 घंटे काम करना, स्कूल, ट्यूशन, कोचिंग, डाक्टरों के चक्कर, दवाईयां, जांच परीक्षण सबने जैसे सबको दौड़ में लगा दिया है- ऐसे में समय कहां निकाले व कैसे मैनेज करे। फिर भी हर एक का मन तो रहता है कि, समाज के लिये कुछ करें, समय निकाले, आप सब इस बात से सहमत होंगे। समाज व सामाजिक गतिविधि व कार्यक्रम में मेलजोल का सोचना भी चाहिये, यह हमारी जरूरत है व कर्तव्य भी है।

1. नई कार्यकारिणी- इसी को ध्यान में रखकर इस बार कार्यकारिणी में अलग-अलग क्षेत्र के सदस्य लिये है, व उनके लिये हमने अलग-अलग कार्यक्रम तय किये है, जिससे सब मिलते जुलते रहे, सम्पर्क में बने रहे व सबको मौका मिले, मेरा अनुरोध है कि, ज्यादा से ज्यादा इसमें शामिल हो व अपने सुझाव रखे। परिवार से रिश्ते में से तो जुड़े हैं ही, उसके साथ-साथ ऐसी व्यवस्था करें कि, इन्दौर के सब नागर परिवार एक कड़ी सम्पर्क सूत्र से जुड़े हों, सब एक दूसरे के सम्पर्क में हों। खास करके कोई भी परेशानी या तकलीफ या समस्या में हो, या कार्य करने वालों की जरूरत हो तो उसके साथ हम रह सके व शरीर से मन से जरूरत हो तो धन से भी समस्या का हल कर सके।

2. दूसरी बात परिवार में संस्कार बनाये रखने की है। बच्चों का स्कूल में इतना समय जाता है व जिस वातावरण में वह रहता है इससे घर का सम्पर्क घर का वातावरण व परिवार के लिये कम समय मिलता है सुबह से दोपहर या शाम तक स्कूल, फिर ट्यूशन, फिर होमवर्क, स्वास्थ्य आदि के बाद समय ही कहां बचा है कि बड़ों के साथ बैठे, प्रार्थना करें, घर के काम में मदद करें। समय या आज के चलन को तो हम पूरा पलट नहीं सकते पर घर में माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी के रूप में अपना कर्तव्य तो निभाना है। इसे इससे सहज, सरल रूप में परिवार में वातावरण संस्कारित होता है। नागर संस्कारों की दुहाई देते नहीं थकते हैं। उसे हमें कायम रखना व कोशिश करके अपने-अपने घरों परिवारों में बढ़ाना है। पिछलीबार पं. श्री कमलकिशोर जी नागर ने कहा था बच्चों को हॉबी क्लब में भेजते है कि जमाने के साथ दौड़ना हैं। हमे संस्कार क्लब बनाना चाहिये, उसमें भीड़ बढ़ाना है व अपनी परम्परा को पीढ़ी दर पीढ़ी कायम रखकर आगे बढ़ाना है।

दो नावों पर पांव रखकर तो आगे नहीं बढ़ा जा सकता पर अपने पैर अपनी धरती पर मजबूत रहे यह करने की कोशिश तो कर सकते हैं। भगवान हाटकेश को प्रणाम करके व पवन पुत्र हनुमानजी का स्मरण करके नतमस्तक होकर मैं आगे आने वाले वर्ष के लिये हम सब के लिये शुभ हो, मंगलकारी हो प्रगति व सफलता दायक हो। नई समिति सक्षम व्यक्तित्व की बनी है, मुझे पूरा विश्वास है कि वे पिछले वर्षों की तरह मासिक बैठक करके मिलते रहेंगे व समाज को सही दिशा देने में मदद करेंगे। सबको अच्छा स्वास्थ्य लाभ हो, सद्भाव बढ़े यही प्रार्थना करती हूं।

❖ **श्रीमती शारदा मण्डलोई**

आचार्य पं. सन्तोष कुमार व्यास (देवज्ञ)

हस्तरेखा विशेषज्ञ, वास्तुविद्, कुंडली मिलान

(ज्योतिष विद्या से बतायें भविष्य फल का आधार श्रद्धा व विश्वास है।)

10, बीमानगर, खजराना रोड़, इन्दौर फोन 4060184, मो. 9425963751

संस्थापक-
स्व.श्रीमती प्रभा शिवप्रसादजी शर्मा
संरक्षक-
श्रीमती निर्मला कमलकिशोरजी नागर
सेमली आश्रम
श्रीमती प्रतिभा आलोकजी मेहता
नई दिल्ली
श्रीमती विशाखा मौलेशजी पोट्टा
मुम्बई (महा.)
श्रीमती नलिनी रजनी भाई मेहता
अहमदाबाद (गुज.)
श्रीमती शारदा विनोदजी मण्डलोई
इन्दौर (म.प्र.)
श्रीमती आशा ओमप्रकाशजी मेहता
भोपाल (म.प्र.)
श्रीमती उषा रमेशजी दवे
इन्दौर (म.प्र.)
श्रीमती अंजना सुरेन्द्रजी मेहता
शाजापुर (म.प्र.)
श्रीमती सुषमा सुभाषजी व्यास
भोपाल (म.प्र.)
श्रीमती प्रमिला आशिषजी त्रिवेदी
इन्दौर (म.प्र.)
श्रीमती प्रमिला ओमप्रकाशजी त्रिवेदी
रतलाम (म.प्र.)
श्रीमती शीला जगदीशजी दशोरा
इन्दौर (म.प्र.)
श्रीमती रमा सुरेन्द्रजी मेहता
उज्जैन (म.प्र.)

❐ प्रदेश संवाददाता ❐
उज्जैन- मो.9301137378
सौ. अनामिका मनीष मेहता
खण्डवा-मो.98267-74742
सौ.शोभना सरोज जोशी
खरगोन-मो.98936-18231
सौ.वर्षा आशीष नागर,
रतलाम-मो.94251-03628
सौ.हर्षा गिरीश भट्ट
नीमच-मो.94240-33419
सौ.सावित्री रमेश नागर
नागदा-मो.98270-85738
सौ.शैलबाला विजयप्रकाश मेहता
खड़ावदा-मो. 98267-32441
सौ.नैना ओमप्रकाश नागर
पचौर-मो.94244-65799
सौ.संध्या शैलेन्द्र नागर
रीवां-मो.-94258-74798
सौ.मालिनी किशन पण्डया
राऊ-फोन-0731-6538275
सौ.माया गिरजाशंकर नागर
माकड़ोन-फोन-07369-261391
सौ.सुनीता महेन्द्र शर्मा
पीपलरावां-फोन-07270-277722
सौ.शकुंतला हरिनारायण नागर
देवास-मो.98273-98235
सौ.सरिता मोहन शर्मा
सागर- मो. 98270-88588
श्रीमती अलका प्रमोद नागर
झाबुआ- मो. 9424064104
सौ. लीना-राजेश नागर

प्रधान सम्पादक-
सौ. संगीता दीपक शर्मा
सम्पादक-
सौ. दिव्या अमिताभ मण्डलोई
सौ. दमिता नवीन झा
सह सम्पादक-
सौ. रुचि उमेश झा
सौ. संगीता विनोद नागर
सौ. सुनिता धर्मेन्द्र भट्ट
सौ. अरुणा बृजकिशोर मेहता
सौ. सरोज पं. कैलाश नागर
सौ. नीलम राजेन्द्र शर्मा
सौ. नीता वाल्मिकी नागर
सौ. जया सुभाष नागर
सौ. पल्लवी जय व्यास
सौ. तृप्ति निलेश नागर
सौ. ममता मुकुल मण्डलोई
सौ. ज्योति राजेन्द्र नागर
सौ. वन्दना विनीत नागर
सौ. आशा योगेश शर्मा
सौ. संगीता प्रदीप जोशी
सौ. बिन्दू प्रदीप मेहता
सौ. पूजा अमित व्यास

20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर फोन. 0731-2450018 फैक्स-0731-2459026 मो.94250-63129, 98260-95995, 94259-02495, 98260-46043, 93032-74678, 99262-85002, 93032-29908
Email-manibhaisharma@gmail.com, jayhotkeshvani@gmail.com

नमः स्तस्यै नमो नमः

श्रीमती प्रभा शर्मा

श्री- सृमद्धि, स्वास्थ्य, सम्पदा, सच्चरित्र, साहस, सविनयी, संस्कार व सत्कार, प्रिय, 'अतिथी देवो भव' पर पूर्ण आस्था रखने वाली स्त्रीयोचित सभी गुणों से युक्त, परिवार, रिश्तेदार, जाति-समाज व जन साधारण में सदा एक सा सद्व्यवहार रखने वाली श्रद्धा,आस्था,आदर,प्रेम, सद्भाव की प्रतीक आदरणीय 'बेन' श्रीमती प्रभा शर्मा के लिये बहुत कुछ लिखना चाहता हूं, किन्तु मन व मस्तिष्क में संतुलन नहीं हो पाता है। मस्तिष्क कहता है कि वे वैकुण्ठवासी हो गई है, किन्तु मन कहता है वे कहीं नहीं गई हैं। यहीं हमारे बीच हैं। जब भी मैं इन्दौर उनके घर जाऊंगा वे अत्यन्त ही निश्छल भाव से प्रसन्न होकर स्वागत करेंगी व उनके सानिध्य में कब 2-4 घण्टे व्यतीत हो गये पता ही नहीं चलेगा। जब वहीं से वापस चलने को होऊंगा वे बिदा करने को राजी ही नहीं होंगी। व कम से कम 1-2 दिन तो रुकने का आग्रह हमेशा की तरह अवश्य करेंगी। आखिर मुझे शीघ्र आने व उनके यहां रुकने का वचन देना पड़ेगा। तब वे वापस आने देंगी।

म-न, वचन, कर्म से पहले पति व पश्चात परिवार के प्रति समर्पित आदरणीय बेन एक मध्यमवर्गीय परिवार से ब्याह कर अपने ससुराल राऊ आई थी। कुछ समय पश्चात वे राऊ से इन्दौर आ गई। उनके पति आदरणीय स्व. श्री शिवप्रसादजी शर्मा शिक्षा विभाग में कार्यरत थे। उज्जैन में उनके पिता सम्माननीय स्व. श्री गोवर्धनलालजी मेहता 'दा साहब' एक कर्तव्यशील मिलनसार व जीवट वाले व्यक्ति थे। उन्होंने मकर संक्रांती 14 जनवरी 1969 को उज्जैन से 'दैनिक अवन्तिका' का प्रकाशन प्रारंभ किया। नगर-नगर, गांव-गांव घूम फिर कर 'अवन्तिका' का प्रचार-प्रसार किया व एजेन्सियां स्थापित की। उन्हीं के मार्गदर्शन में माननीय 'बेन' ने भी अपने मकान में एक छोटी सी प्रिंटीग प्रेस स्थापित की व बाद में 'सांध्य दैनिक अवन्तिका' का प्रकाशन प्रारंभ किया। पति के शासकीय सेवा में व्यस्त रहने, बच्चों के छोटे होने के कारण 'बेन' को अकूत मेहनत करना पड़ी। उनका एक मात्र लक्ष्य था कि उनके बच्चे अच्छा पढ़ लिख ले व अपने व्यवसाय में संलग्न हो जावें। उन्हें व्यवसाय या नौकरी के लिये किसी के समक्ष गिड़गिड़ाना नहीं पड़े। समाज में उनके परिवार की मान प्रतिष्ठा हो, परिवार में कोई अभाव न हो ईश्वर के प्रति उनकी आस्था, उनकी लगनशीलता व पुरुषार्थ से ईश्वर ने उनकी भावनाओं को साकार किया।

ती-क्ष्ण बुद्धि की स्वामिनी 'बेन' ने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि, विवेक व बुद्धि चातुर्य के बल पर ही आज आपने सारे परिवार को एक सूत्र में पिरोये रखा। परिवार में बच्चों को चाहे कोई व्यवसाय सम्बंधी सलाह मशविरा या परिवार में बहुओं का कोई विचार, विमर्श बेन की राय के बिना कभी भी अन्तिम तय नहीं पाते थे। श्रद्धेय 'बेन' ऐसी राय देती जो सर्वमान्य होती व उसी के अनुसार कार्य सम्पन्न होता। उसी के कारण परिवार में एकता, भाईचारा व सामंजस्य है। किसी की हिम्मत नहीं थी, जो 'बेन' के विरुद्ध जा सके। परिवार ही नहीं समाज व रिश्तेदारी में भी वे सुख-दुख में भाग लेती थी। यह वो कभी सम्भव ही नहीं था कि उन्हें निमंत्रण मिले व वे नहीं आवें। व उनके पुत्र, पुत्र वधुएं आदि सभी के सुख-दुख व समाज के कामों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते। 'बेन' उनके सानिध्य में आने वाले हर व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरुष बच्चा हो या युवा, सभी को परिवार के समान स्नेह देती व उन्हें सद् शिक्षा देती।

प्र-भा देवी विलक्षण प्रतिभा की धनी थी। उनमें धैर्य साहस व निर्णय की अद्भुत क्षमता थी। दो वर्ष पूर्व उन्होंने समाज की एक मासिक पत्रिका जिसमें लगभग सभी विधाओं का समावेश हो। उसे पढ़कर प्रत्येक नागरजन अपने को गौरवान्वित अनुभव करे आदि कई विचारों को लेकर उन्होंने मासिक 'ज़य हाटकेश वाणी' पत्रिका के प्रकाशन का विचार अपने सुपुत्रों के समक्ष रखा। सुपुत्रों द्वारा अस्वीकार करने का तो सवाल ही नहीं है। उन्होंने अपनी सहमति तो दी साथ में आने वाली कठिनाईयों को भी रखा, किन्तु 'बेन' ने सभी भगवान हाटकेश्वर पर छोड़ते हुए, प्रकाशन प्रारंभ किया। वे जानती थी कि 'मैं अकेला ही चला था, ज़ानिबे मंजिल, मगर लोग साथ होते गये और कारवां बनता गया।' आज 'जय हाटकेशवाणी' का अपना विशाल परिवार है व पत्रिका नागर समाज की प्रमुख पत्रिका बन गई है।

भा-रत-भूमी को पुण्य-प्रसूता, वीर-प्रसूता भूमी कहा जाता है और वह है भी इसी प्रकार अवन्तिका की पावन भूमी पर जन्म लेने वाली महामना 'बेन' एक धार्मिक-पुण्यवान महिला थी। प्रातः सायं पूजन-पाठ करना, प्रतिदिन श्रीनाथजी के दर्शन करना तथा तीर्थस्थलों की धार्मिक यात्रा करना पति, माता-पिता, पुत्र-पुत्री व बहुओं को भी तीर्थों के दर्शन करवा कर अपना व अन्य सभी का जीवन धन्य बनाना 'बेन' का उद्देश्य था। बेन ने अपने सद् आचरणों से चारों पुरुषार्थों को प्राप्त किया।

श-क्ति स्वरुपा नारी को जो लोग अबला, लाचार या दासी समझते हैं, उनके लिये 'बेन' एक चुनौती हैं। उनके चेहरे का ओज व आंखों की चमक हर किसी को नीचे देखने को विवश कर देती थी। श्री दुर्गा सप्तशती में वर्णित 'या देवी सर्व भूतेषु बुद्धि रुपेण, शक्तिरुपेण, क्षांतिरुपेण, शांतिरुपेण, श्रद्धारुपेण, कान्ति रुपेण, लक्ष्मी रुपेण, मातृ रुपेण संस्थिता नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः। आदि सभी गुणों का 'बेन' में समावेश था। जो बिरले ही व्यक्तियों में होता है।

र्मा-शर्मा परिवार की उक्त विभूति श्रीमती प्रभा शर्मा 'बेन' अब केवल याद बन कर रह गई हैं। उन्होंने अपने बल पर जो कार्य किये हैं, वे अच्छे-अच्छे लोग नहीं कर सकते। उन्होंने अपने दम पर समाज में एवं शहर में अपनी ख्याति प्राप्त की है। संस्कृत में कहा गया है-

उत्तमा आत्मनः ख्याता, पितुः ख़्याताश्च महपमा।
अधमा मातुलात् ख्याता, श्वसुराच्चा धमा धमा।।

कहते हैं इस मृत्यु लोक में जिन-जिन ने जन्म लिया है, एक दिन उनकी मृत्यु अवश्यंभावी है। मृत्यु एक शाश्वत सत्य है। इसे कोई झुठला नहीं सकता। आदरणीय 'बेन' सभी को छोड़कर अनन्त में लीन हो गई हैं। शर्मा परिवार, रिश्तेदारों परिचितों व स्नेहियों के लिये यह एक अपूरणीय क्षति है। फिर भी दिवंगत 'बेन' की शायद कोई इच्छा अधूरी नहीं रही होगी। उन्होंने जी भर कर जिया है व दूसरों को जीना सिखाया है। वे चाहे अपने स्थूल शरीर से हमसे बिदा हो गई है किन्तु सूक्ष्म शरीर (आत्मा) से आज भी वे यहीं कहीं हमारे आस-पास ही हैं। जैसा कि श्रीमद् शंकराचार्यजी ने अपनी पुस्तक विवेक-चूड़ामणी में लिखा है-

न जायते नो मियते न वर्धते, न क्षीमते नो बिकरोती नित्यः।
विलीयमानेऽपि वयुष्म मुमिन् न लीमते कुम्भ इवाम्बरं स्वयम् ।।
(आत्म निरुपण श्लोक 136)

वह न जन्मता है, न मरता है, न बढ़ता है, न घटता है- और न विकारों को प्राप्त होता है। वह नित्य है, और इस शरीर के लीन होने पर भी, घटके टूटने पर घटाकाश के समान लीन नहीं होता। **सादर श्रद्धांजलि**

-सत्येश नागर तराना-फोन-07369-235246

खण्डवा में हाटकेश्वर जयन्ति की धूम

खण्डवा। प्रतिवर्षानुसार श्री हाटकेश्वर नागर मंडल नागर समाज खंडवा के तत्वावधान में बुधवार दिनांक 8 अप्रैल 2009 को मनाया गया। हाटकेश्वर वार्ड स्थित श्री हाटकेश्वर मंदिर में भगवान हाटकेश्वर महादेव का पूजन अर्चन श्री देवीदास पोत्दार अध्यक्ष श्री हाटकेश्वर नागर मंडल नागर समाज एवं उपेन्द्र-कविता मंडलोई के कर कमलों से पंडित मदनमोहन दवे ने सम्पन्न कराया। श्रृंगारित भगवान हाटकेश्वर की सुसज्जित पालकी प्रातः 9 बजे श्री हाटकेश्वर मंदिर से गाजे-बाजे, बैनर, पताका आदि के साथ शोभायात्रा के रूप में प्रारंभ हुई।

शोभायात्रा में अध्यक्ष के अतिरिक्त उपाध्यक्ष श्री विजय नारायण व्यास, सहसचिव नारायण जोशी, जितेन्द्र मंडलोई, कार्यकारिणी सदस्य श्री प्रभाकर मंडलोई, श्री चन्द्रभानु दीवान, श्री महेश जोशी, श्री सुरेश कुमार मंडलोई, श्री कैलाश पंडित, श्री मनोज मंडलोई, श्री लक्ष्मीकान्त मेहता, श्रीमती सुमन दवे, श्रीमती साधना जोशी, श्रीमती कामिनी पंडित, श्री आलोक जोशी एवं भूतपूर्व अध्यक्ष श्री कृष्णानन्द मेहता एवं श्री अवध प्रसाद त्रिवेदी, भूतपूर्व उपाध्यक्ष श्री प्रभाकर दीक्षित, श्री सुरेश जोशी एवं श्री राजेन्द्र पोत्दार, श्री ऋषिकुमार शर्मा एवं समाज के अन्य गणमान्य बुजुर्ग, नवयुवक, नवयुवतियां एवं महिलाएं भारी संख्या में सम्मिलित थे शोभायात्रा जैन मंदिर चौक, बुधवारा बम्बई बाजार, भगवन्त चौक, टाऊनहॉल, हरीगंज एवं हाटकेश्वर वार्ड थे। शोभायात्रा में शिवजी के भजन एवं श्री हाटकेश्वर भगवान की जय-जयकार के नारे की गूंज ने अमिट छाप छोड़ी। साथ ही मार्ग में स्थित सीतलामाता, राममंदिर, तिलभांडेश्वर मंदिर, भैरव बाबा, सत्यनारायण मंदिर, हरीगंज का माताजी का मंदिर, भवानी माता एवं गणेश मंदिर के सामने पालकी रोककर भगवान हाटकेश्वर का अभिवादन करवाया गया। राममंदिर पर श्री भानु, कृष्णकुमार एवं नागेश व्यास द्वारा शीतल पेय एवं अन्य स्थलों पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा शीतल जल एवं शीतल पेय की व्यवस्था दी गई। ठीक 12 बजे शोभायात्रा श्री हाटकेश्वर मंदिर पर समाप्त हुई।

भगवान हाटकेश्वर के आशीर्वाद से खंडवा निवासी श्री उपेन्द्र एवं कविता मंडलोई तथा बाकानेर (गुजरात) निवासी श्री गिरीश कुमार एवं सुगंधा मान्कड़ द्वारा दोपहर 2 बजे अभिषेक एवं परम्परानुसार हवन-पुजन एवं आहुति का लाभ उठाया। अभिषेक एवं हवन को प्रमुख आचार्य पं. मदन मोहन दवे ने कराया, जिन्हें पं. गिरिजाशंकर व्यास, पं. माधवराव मंडलोई, पं. तुसार दवे, पं. अरविन्द व्यास एवं पं. विनीत पोत्दार ने सहयोग दिया। सायं 7 बजे पूर्णाहुति पश्चात आरती एवं प्रसाद वितरण हुआ। पश्चात अध्यक्ष द्वारा समाज को दिये भोज का समाज के सदस्यों ने आनन्द लिया। श्री गिरीश मांकड़ एवं उपेन्द्र मंडलोई ने भी आर्थिक सहयोग प्रदान किया। सम्पूर्ण कार्यक्रमों में समाज के सभी सदस्यों की उपस्थिति हेतु सचिव श्री प्रेमनारायण व्यास द्वारा कार्यकारिणी की ओर से आभार माना।

-प्रस्तुति-सरोज जोशी

नागर एकेडमी स्कूल

हिन्दी अंग्रेजी माध्यम

हमारे यहां ट्रेंड शिक्षिकाओं के द्वारा शिक्षा दी जाती है।
नागर समाज के बच्चों के लिए विशेष सुविधा दी जावेगी।

रिंग रोड खजराना, इन्दौर

जया-सुभाष नागर
मो. 97703-96623
फोन 3018451

जन्मदिन पर बधाई

योग्य पौराणिक (शोतू) 25 अप्रेल
प्रथम वर्षगांठ पर हार्दिक बधाई
दादा-दादी- डॉ. व्रजेन्द्र-डॉ. कुसुम पौराणिक
नाना-नानी- डॉ. आनन्दीलाल-आशा नागर
पापा-मम्मी- डॉ. शांतनू-शीतल पौराणिक
बूआ-फूफाजी- श्रद्धा-मृत्युंजय शर्मा, मामा-मामी-
संदीप-मधु नागर, मनोज नागर, रुद्रांक, नेनसी, वेदांक
सम्पर्क- 71, एम.आई.जी. सांदीपनी नगर, उज्जैन

दक्ष वोरा
सुपुत्र- नताशा-अपूर्व वोरा
दसवें जन्मदिन की बधाई
नानी गायत्री-नरेन्द्र मेहता
एवं वोरा परिवार

प्रणव त्रिवेदी
20 मई 2005
(हेप्पी बर्थ डे टू यू)
शुभाकांक्षी- दादा-दादी, नाना-नानी, पापा-मम्मी
डॉ. जयदेव त्रिवेदी
93 प्रकाश नगर कालोनी, इन्दौर फोन 0731-2400344

चि. कृष्णम् नागर
सुपुत्र- नीता-विनोद नागर
दिनांक 15 मई
शुभाकांक्षी- कु. नेहा, कु. मुग्धा एवं कु.
यशस्विनी एवं समस्त नागर परिवार

मास्टर काव्य व्यास
(सुपुत्र- अभिजित-दिप्ती व्यास)
दिनांक 1 मई 2006
पं. विश्वनाथ-प्रेमलता व्यास (दादा-दादी)
शान्तिलाल-शैलजा नागर (नाना-नानी)
फोन 2559838, मो. 99268-12088

श्रीमती वंदना-द्विजेन्द्र व्यास
(सुपुत्री- राजेश-लीना नागर)
जन्मदिनांक 2.5.1984
परशुराम ज्योतिष अनुष्ठान केन्द्र, झाबुआ

चि. डिम्पल नागर
(सुपुत्री-राजेश-लीना नागर)
जन्मदिनांक 13.5.1987
नागर बुक बाईन्डर्स, झाबुआ

चि. हितांशी नागर
(सुपुत्री- विपिन-ज्योति नागर)
जन्मदिनांक 17.5.2002
सरदार पटेल मार्ग,
थान्दला जिला झाबुआ

दुनिया चार दिन की है

मुकद्दर आजमाले ये दुनिया चार दिन की है।
कैसे रुठा है वो मना ले, ये दुनिया चार दिन की है।
कभी टूटा भरोसा है, कभी ये आसन बंध तो
कैसे भी मंजिल पाले, यह दुनिया चार दिन की है
क्या रीत है क्या प्रीत है, समझ में कुछ नहीं आया।
यूं ही दिल को समझाले, ये दुनिया चार दिन की है
वही होंगे तेरे जो बहाते हों, रात-दिन आंसू वो
पीता है क्यूं खूनी प्याले, ये दुनिया चार दिन की है
यहीं यमुना का पनघट है, यही काशी, यहीं काबा
नजर जरा अपनी झुकाले ये दुनिया चार दिन की है
रहम दिल हो के जी ले, रखा आतंक में क्या है?
अब जरा मुस्कुराले, ये दुनिया चार दिन की है।
जमीं से आस्मां तक बिखरी रोशनी है उसकी
भारती जरा सिर को झुकाले, ये दुनिया चार दिन की हैं।

सुभाष नागर 'भारती'
नागर मेडिकल स्टोर्स अकलेरा (राज.)

शर्मा ब्रोकर्स
प्रो. आनंद शर्मा
कपास्या खली, कपास्या एवं तेल के केनवासिंग एजेन्ट
ऑफिस- 5/2, मूराई मोहल्ला छावनी, इन्दौर फोन 2706115, 2707115, मो. 98260-88115, 97130-88115
निवास- 93, रंगवासा रोड, राऊ मो. 98260-81115, 99260-88115, 90095-62115

वैवाहिक (युवक)

सत्यम कपिलकांत नागर
जन्मतिथि 24-03-1981 (4.50 ए.एम. मथुरा)
कार्यरत- स्वयं का बिजनेस
सम्पर्क- फ्लेट नं. 603, रॉयल टावर, ब्लॉक-बी, पचपेड़ी नाका धमतरी रोड, रायपुर (छत्तीसगढ़)
मो. 98260-82799, 98266-82798, 93005-88899

निषित प्रवीण त्रिवेदी
जन्म 27/9/1979 (स. 8.05 रात्रि बांसवाड़ा)
शिक्षा- बी.कॉम. कम्प्यूटर में डिप्लोमा
सम्पर्क- 20/163, श्री गोपाल विला, त्रिपोलिया रोड, बांसवाड़ा (राज.) मो. 94600-92497

गौरव भरत रावल
जन्मदिनांक 29 मई 1979 (9.30 प्रातः देवास)
शिक्षा- बी.कॉम. (कम्प्यूटर हार्डवेअर)
व्यवसाय- सी.डी. म्यूजिक, इलेक्ट्रॉनिक शॉप, प्रापर्टी ब्रोकर्स
सम्पर्क- 17, गणेशपुरी कालोनी, खजराना, इन्दौर
मोबाईल- 98930-73467

निमिष नन्दकिशोर नागर
जन्मदिनांक 28 जनवरी 1981
शिक्षा- बी.ए., एम.सी.ए.
व्यवसाय- सेन्ट्रल क़ो-ऑप. बैंक में कार्यरत
सम्पर्क- 452, बसन्त विहार, कोटा (राज.)
मोबाईल- 94134-40721

नितिन झा (बड़नगरा)
जन्मदिन 2.3.1982 (17.47 मिर्जापुर, उ.प्र.)
शिक्षा- बी.कॉम., एम.बी.ए.
कार्यरत- एच.एस.बी.सी. बैंक दिल्ली
सम्पर्क- श्रीकान्त झा 28/206, गोकुलपुरा, आगरा (उ.प्र.)
फोन 0562-2854834,

अर्पित अभयचंद मेहता
जन्मतिथि 25-1-1982
शिक्षा- एम.बी.ए (आईटी एंड मार्केटिंग)
कार्यरत- रिलायंस कम्युनिकेशन मुंबई
सम्पर्क - (07272) 250446, मो. 94250-48746

सुश्रुत हेमन्त त्रिवेदी
जन्मदिनांक 23-09-1980
शिक्षा- बी.कॉम., पी.जी. डिप्लोमा इन टुरिज्म मैनेजमेंट
कार्यरत- महिन्द्रा, ट्रेवेल्स एंड रिसोर्ट्स लि. मुंबई
सम्पर्क-11, काशी विश्वनाथ प्लॉट, राजकोट (गुज.) 360001
फोन 0281-2445544, मो. 09998521469

राकेश आनंदीलाल मेहता
जन्मदिनांक 7-3-1972
शिक्षा- बी.एस.सी. 'एग्री'
सम्पर्क- 62, शिवविहार कॉलोनी, (वेटरनरी कॉलेज के सामने)
महू जि. इन्दौर फोन 07324-271035

अपूर्व सुशील कुमार नागर
जन्म दिनांक 9.04.1982
शिक्षा- बी.कॉम. एल.एल.बी.
कार्यरत- एड्व्होकेट
सम्पर्क- 07270-222487, मो. 98270-61512

राहुल अशोक गुरु
जन्मतिथि -21-8-1983, रात्रि 3.20
शिक्षा- बी.ई. इंजिनियरिंग
कार्यरत- एम.एन.सी. इन्टरनेशनल, इन्दौर
सम्पर्क- पड़ावा जीडीसी कालेज के सामने, खंडवा
मो. 9229428828

वैवाहिक (युवती)

श्वेता भरत रावल
जन्मदिनांक 13-12-1980 (7.45 सुबह, इन्दौर)
शिक्षा- एम.कॉम. (एम.ए. हिन्दी साहित्य, कम्प्यूटर कोर्स)
संपर्क- 17 श्री गणेशपुरी कालोनी, खजराना (इन्दौर) मो. 98930-73467

मेघा दिनेश जोशी
जन्म दिनांक 22 अगस्त 1980
शिक्षा- बी.पी.टी. (फिजियोथेरेपिस्ट)
एम.बी.ए. (हास्पी.एड.)
सम्पर्क- 0731-2491007

रुचि अशोक गुरु
जन्मतिथि- 5-2-1985, प्रातः 4 बजे
शिक्षा- एम.सी.ए.
सम्पर्क- पड़ावा खंडवा मो. 9229428828

अनुराधा के.एन. शर्मा
जन्मतिथि- 12 अगस्त 1982, सायं 4.17
शिक्षा- एम.एस.सी. (Ecx.) कार्यरत- व्याख्याता
सम्पर्क- इन्दौर मो. 9425486724

नीतू राधेश्याम नागर
जन्मदिनांक 28-2-1987
शिक्षा- बारहवीं
सम्पर्क- नयापुरा तराना जि. उज्जैन मो. 9752089133

मेघा राजेन्द्र दवे
जन्मदिनांक 9-8-86 प्रातः 10.05
सम्पर्क- 57, सिल्वर आर्क्स कालोनी,
मो. 98268-32786, 2321578

तृप्ति लक्ष्मीनारायण शर्मा
जन्मदिनांक 26-9-1983
शिक्षा- एम.ए.
सम्पर्क- मानसभवन रोड तराना (जिला उज्जैन)
मो. 9993351356

गरिमा पंडित
जन्मदिनांक 05-04-1987
शिक्षा- बी.कॉम कम्प्यूटर, पीजीडीसीए
सम्पर्क- श्री आलोक मंडलोई, हरिगंज, खण्डवा
फोन-0733-2227854, 94259-52011

विवाह की पचासवी वर्षगांठ

श्री सूर्यप्रकाशजी मेहता एवं श्रीमती मधुबाला मेहता

को विवाह की स्वर्ण जयंति पर हार्दिक बधाई
दिनांक 5 मई
शुभकामनाएं- श्रीमती मीना-किशोर त्रिवेदी, श्रीमती वन्दना-विनय नागर, राजेश, अक्षय, निधि, जय एवं अंकित।

श्रेष्ठ सचिव अवार्ड

शाजापुर। लाइनेस 323 जी.1 के अलंकरण समारोह जो कि दिनांक 5-4-09 को जाल आडिटोरियम इन्दौर में आयोजित किया गया था। सौ. ममता नागर नीमवाड़ी शाजापुर को श्रेष्ठ रिपोर्टिंग करने पर 'श्रेष्ठ सचिव' अवार्ड से सम्मानित किया गया। आप पातंजली योग सेवा समिति हरिद्वार से महिला योग जिला शाजापुर की भी प्रभारी है आपको क्लब द्वारा योग प्रशिक्षण 'आउट स्टेन्डिंग अवार्ड' भी प्रदान किया गया। अखिल भारतीय नागर परिषद शाखा शाजापुर की ओर से आपको हार्दिक बधाई।

प्रस्तुति- संजय नागर (महिला बाल विकास शाजापुर)
मो. 94254-92560

मुण्डन संस्कार संपन्न

बांसवाड़ा। इन्दौर निवासी श्री दीनदयाल दवे के पौत्र चि. रेवन्त दवे (सुपुत्र- विनोद-मानसी दवे) और चि. मलय दवे (सुपुत्र- विपिन-वंदिता दवे) का मुंडन संस्कार बांसवाड़ा में सम्पन्न हुआ। इस समारोह में दादाजी दीनदयाल दवे, दादीजी मिनाक्षी दवे, चाचा-चाची राजीव-सुरभि दवे (यूएसए) समेत समाज के गणमान्य जन उपस्थित हुए और दोनों बालकों को बधाईयां दी।

विवाह वर्षगांठ की बधाई

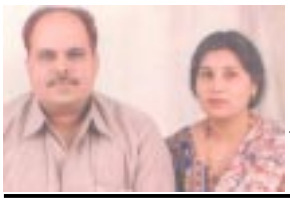

नवीन-सीमा नागर
दिनांक 9 मई
304, आकांक्षा अपार्टमेंट,
ग्रेटर तिरुपति कालोनी, इन्दौर
मो. 98931-63021

चरित्र-अर्पणा मेहता
को 14 अप्रैल विवाह वर्षगांठ की बधाई
मम्मी- श्रीमती गायत्री-नरेन्द्र मेहता, इन्दौर

गोल्ड मेडलिस्ट की उपाधि से सम्मानित

झाबुआ। वैदिक पं. द्विजेन्द्र व्यास (झाबुआ) को भोपाल में आयोजित द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय ज्योतिष महासम्मेलन में गोल्ड मेडलिस्ट की उपाधि से सम्मानित किया गया। सम्मेलन में कई विद्वान उपस्थित थे। इस उपलब्धि पर नागर समाज, परिवारजनों एवं इष्ट मित्रों की ओर से उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं।

प्रियंक त्रिवेदी टाटा कंसलटेंसी में

उज्जैन। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. किशोर भाई त्रिवेदी के प्रपोत्र, नागर परिषद शाखा के पूर्व अध्यक्ष श्री दुष्यंत कुमारजी त्रिवेदी के पौत्र एवं श्री राजेश त्रिवेदी (टमटा) के सुपुत्र श्री प्रियंक त्रिवेदी (बी.ई.एम.बी.ए.) की नवनियुक्ति टाटा कन्सल्टेन्सी सर्विसेस बैंग्लोर में हो गई है। इससे पूर्व वे फ्रेट सिस्टम कंपनी में कार्यरत थे।

प्रस्तुति- दिलीप मेहता, उज्जैन
मो. 94250-94581

दीपक नागर इन्फोसिस में

उज्जैन। दीपक नागर (सुपुत्र- सरोज-नरेन्द्र नागर) की नियुक्ति साफ्टवेअर इंजीनियर के पद पर इन्फोसिस कं. में हुई है। आप वर्तमान में मैसूर (कर्नाटक) में प्रशिक्षणरत हैं। आप स्व. श्री रामगोपालजी नागर, कायथा के पौत्र एवं श्री सुरेन्द्रजी व्यास पीपलरावां के नाती है। शानदार उपलब्धि पर समस्त नागर समाज की बधाई एवं शुभकामनाएं।

प्रस्तुति-श्री नरेन्द्र नागर
चन्दनदीप, सी 41/6, ऋषि नगर, उज्जैन
फोन 0734-2518917
94259-86763 (दीपक) 096208-30016

THE NIS ACADEMY रिलायन्स अनिल धीरूभाई अंबानी ग्रुप कम्पनी

अब उज्जैन में

THE NIS ACADEMY

रिलायंस अनिल धीरूभाई अंबानी ग्रुप कम्पनी आपके बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए

प्रवेश प्रारम्भ

मार्केटिंग मेनेजमेन्ट ○ सेल्स एवं कस्टमर केयर
○ रिटेल मेनेजमेन्ट एवं एच आर ○ टेलिकॉम एवं फाईनेंस

के विभिन्न कोर्सेस जो कार्पोरेट मेनेजमेंट द्वारा निर्मित है।
अधिक जानकारी हेतु आज ही पधारे

23/2/10, दुसरी एवं तीसरी मंजिल वराह मिहीर मार्ग
वसावड़ा पेट्रोल पंप के पास, फ्रीगंज, उज्जैन (म.प्र.)

आज ही संपर्क करें-0734-2520005, मो. 94250-34820,98260-72977,99260-30958, 98276-05018
Email-ujjain@thenisacademy.com, visit us at-www.thenisacademy.com

THE NIS ACADEMY

साथ ही पाए
PQP
फायदा

Courses that:
*are **P**lacement oriented*
*offer **Q**ualification*
*shape your **P**ersonality*

एडवांस प्रोग्राम इन बिजनेस स्किल्स	ए.पी.बी.एस.	योग्यता-ग्रेजुएट्स बी.बी.ए. समय अवधि (2 वर्ष)
ग्रेजुएट प्रोग्राम इन बिजनेस स्किल्स	जी.पी.बी.एस.	योग्यता- अंडर ग्रेजुएट, ग्रेजुएट समय अवधि (3 वर्ष)
पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम इन बिजनेस स्किल्स	पी.जी.पी.बी.एस.	योग्यता- अंडर-ग्रेजुएट,ग्रेजुएट समय अवधि (2 वर्ष)
एम.बी.ए.+ पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम इन बिजनेस स्किल्स	एम.बी.ए+ पी.जी.पी.बी.एस.	योग्यता-ग्रेजुएट समय अवधि (2 वर्ष)
बी.बी.ए+ ग्रेजुएट प्रोग्राम इन बिजनेस स्किल्स	बी.बी.ए+ जी.पी.बी.एस.	योग्यता-12वीं पास समय अवधि (3 वर्ष)

रिटेल लिड फार फ्लोर सुपरविजन	आर.एल.	योग्यता-ग्रेजुएट/वर्किंग प्रोफेशनल समय अवधि (6 महीने)
रिटेल एक्ट फार फंर्टलाईन सेल्स	आर.ए.	योग्यता-12वीं पास समय अवधि (3 महीने)
इफेक्टिव कम्यूनिकेशन एवं पर्सनालिटी डेवलपमेंट	ई.सी.पी.डी.	योग्यता-10वीं पास समय अवधि (2 महीने)
स्पीक-अप	एस.यू.	योग्यता-10वीं पास समय अवधि (3 वर्ष)

Because Becoming Successful Can Be Taught

इन्दौर में भव्य आयोजन

अ.भा. नागर परिषद शाखा इन्दौर

[म.प्र. नागर परिषद से सम्बद्ध]

के तत्वावधान में

सामूहिक यज्ञोपवित संस्कार एवं युवक-युवती परिचय सम्मेलन

दिनांक 14 जून 2009, रविवार

स्थान- ऋतुराज मांगलिक भवन, नवलखा, ए.बी. रोड,
(इन्दिरा प्रतिमा के सामने), बंगाली क्लब के पास, इन्दौर

समय- यज्ञोपवित संस्कार प्रातः 7 बजे से, परिचय सम्मेलन प्रातः 10 बजे से

विशेष- यज्ञोपवित प्रतिबटुक शुल्क - 3501 रु.
परिचय सम्मेलन शुल्क - 300 रु. प्रति

आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि 26 मई 09

सांध्य भोज- खजराना गणेश मंदिर के श्रीमती माणक बेन भट्ट, पं. धर्मेन्द्र भट्ट, पं. अशोक भट्ट, पं. उमेश भट्ट द्वारा प्रायोजित है।

विस्तृत जानकारी के लिये सम्पर्क करें-
प्रवीण त्रिवेदी (अध्यक्ष)-9301529899,
केदार रावल (सचिव)-9826512738,
आशीष त्रिवेदी (संयोजक) 98260-80985
दीपक शर्मा (संयोजक) 9425063129,
पं. अशोक भट्ट (संयोजक)-9302105856

प्रवीण त्रिवेदी अध्यक्ष केदार रावल सचिव चुने गए

इन्दौर। अखिल भारतीय नागर परिषद शाखा इन्दौर के त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए। जिसमें श्री प्रवीण त्रिवेदी निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए। अन्य पदाधिकारियों में उपाध्यक्ष प्रो. राजेन्द्र नागर, पं. अशोक भट्ट, सचिव केदार रावल, सह-सचिव योगेश शर्मा, कोषाध्यक्ष पुरुषोत्तम जोशी, सांस्कृतिक सचिव हर्ष मेहता एवं प्रचार सचिव मनीष शर्मा चुने गए। कार्यकारिणी सदस्यों में नीलेश नागर, गिरजाशंकर नागर, विनीत नागर, डॉ. प्रकाश शर्मा, प्रदीप मेहता, अतुल दवे एवं नवीन नागर का चयन हुआ।

नागर महिला मंडल का गठन

इंदौर। अ.भा. नागर ब्राह्मण परिषद शाखा इंदौर से संबद्ध नागर महिला मंडल के त्रैवार्षिक चुनाव में अध्यक्ष श्रीमती उषा दवे, उपाध्यक्ष डॉ. रेणुका मेहता, श्रीमती संगीता नागर, सचिव श्रीमती मीना त्रिवेदी, सहसचिव डॉ. रजनी मेहता, कोषाध्यक्ष श्रीमती शारदा मंडलोई, सांस्कृतिक सचिव श्रीमती गायत्री मेहता निर्विरोध चुने गए। जबकि कार्यकारिणी सदस्य हेतु जया नागर, सुश्री अनिता पौराणिक, श्रीमती सीमा मंडलोई, श्रीमती अरुणा व्यास, श्रीमती बिंदू मेहता, श्रीमती सुषमा मेहता, श्रीमती विभूति जोशी को मनोनित किया गया।

त्याग एवं करुणा की बेजोड़ प्रतिमूर्ति श्रीमती कुसुमदेवी नागर

इन्दौर। स्त्री रूप में जन्म लेना कठिन एवं विभिन्न रिश्तों को क्रमवार जिंदगी में त्रुटिरहित निभाना कठिनतम परीक्षा होती है। उसमें उत्तीर्ण होना ही आवश्यक नहीं वरन् उसमें योग्यता अंक सहित उत्तीर्ण होना अपने आप में एक मिसाल है। इस विषय में यदि श्रीमती कुसुमदेवी नागर का नाम लिया जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगी जिन्होंने कि अपने संपूर्ण जीवन में पारिवारिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों को निर्बाध रूप से निभाते हुए अपनी कुसुम रूपी सुगंध बिखेरी जिससे कि संपूर्ण परिवार एवं कुटुंब में हमेशा सुगंध प्रफुल्लित हुई एवं अपनत्व का वातावरण जीवन भर रहा।

श्रीमती कुसुम देवी नागर का जन्म ग्राम रूपाखेड़ी, जिला देवास निवासी श्री आत्मारामजी शर्मा की धर्मपत्नि श्रीमती केसरबाई की कोख से दिनांक 1-4-1950 को हुआ। श्रीमती केसरबाई को सन्तान सुख से कई बार वंचित होने के पश्चात कुसुम का जन्म हुआ। श्री सिद्धनाथजी पटेल की धर्मपत्नी तथा श्री गोपाल पटेल, रूपाखेड़ी की माताजी श्रीमती आनंदीबाई नागर द्वारा कुसुम बालिका को ग्रामीण मान्यता के अनुसार बांस की टोकरी में लिटा कर घिसा गया था। यह चलित प्रक्रिया के उपरान्त कुसुम का उपनाम घिसीबाई विवाह होने तक चलन में आता रहा। पूरे परिवार में सबसे छोटी होने के कारण सबकी प्रिय लाड़ली एवं बचपन की शरारतें भी माफी लायक रहीं। समय उपरान्त घुन्सी निवासी प्रतिष्ठित परिवार श्री जगन्नाथजी नागर के सबसे छोटे सुपुत्र श्री दुर्गाशंकरजी नागर के साथ बालिका वधु के रूप में मात्र 13 वर्ष की उम्र में गंगादशमी के शुभ दिन विवाह संपन्न हुआ। रूपाखेड़ी ग्राम से घुन्सी ग्राम आने पर ससुराल पक्ष के द्वारा बालिका वधु का नाम स्नेहरूप कुसुम रखा गया।

कुसुम में धार्मिक संस्कार बचपन से ही विद्यमान थे और ससुराल में आने के पश्चात माता श्रीमती हंजादेवी नागर (सासुमा) के सानिध्य में नियमित पूजन, ध्यान एवं जप की आस्था निरंतर प्रवृत्त हुई। नेपाल (श्री काठमांडू) यात्रा परिवार एवं बड़ी ननंद के साथ संपूर्ण दक्षिण यात्रा, भागवत कथा श्रवण हेतु शुकतीर्थ, हरिद्वार, वृन्दावन एवं म.प्र. के विभिन्न स्थानों पर भतीजे मालवसंत पं. श्री कमलकिशोरजी नागर एवं पं. श्री ब्रजकिशोर नागर एवं अन्य महान संतों के श्रवण हेतु भ्रमण किया जाता रहा। गोवर्धन पर्वत की 21 दिवसीय यात्रा बीमार रहते हुए भी पूर्ण की। इसी के साथ-साथ सामाजिक कार्यक्रमों में भी उपस्थिती एवं सहयोग निरंतर रहा। इसी के फलस्वरूप अंतिम समय में पति श्री दुर्गाशंकर नागर की इच्छानुसार श्री शिवशंकर परिवार (शिव पंचायत) की मूर्तीदान एवं प्राण प्रतिष्ठा का संकल्प लिया गया था। जो कि माता-पिता की प्रेरणा एवं संकल्प पूर्ति हेतु पुत्र विनोद एवं पुत्रवधु सौ.कां. नीता नागर द्वारा पं. श्री गोपालजी नागर ग्राम खजराना, इन्दौर के नये परिसर स्थित नवनिर्मित हाटकेश्वर मंदिर में दिनांक 27-4-09 तिथि अक्षय तृतीया के शुभ मुहूर्त में संपन्न किया गया। श्रीमती कुसुम नागर का स्वभाव पति की तरह ही भावुक, स्नेही एवं त्यागपूर्ण रहा। संपूर्ण परिवार के साथ भतीजे एवं भतीजियों को एक सूत्र में बांधे रखा एवं स्नेहमयी सानिध्य एवं अपनत्व रखा। पति का सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में भी मुक्तहस्त से दान एवं सहयोग को पारिवारिक जिम्मेदारी के तहत निभाया एवं हमेशा उन्हें संबल दिया। अनेक कठिनाइयों एवं संघर्षमयी जीवन अकस्मात पारिवारिक विपत्ति के बावजूद परिवार कुंटुब के प्रत्येक सदस्यों को संबल एवं स्नेह दिया। सभी की खुशी चाही एवं इच्छानुसार उन्हें प्रसन्न रखा। अतएव नागर समाज एवं संपूर्ण परिवार में दोनों पति-पत्नि श्री दुर्गाशंकर एवं कुसुम को स्नेह-करुणा एवं त्याग की प्रतिमूर्ति के रूप में जाना गया। जिसकी क्षतिपूर्ति अल्प समय में एवं असम्भव है।

ननंद परिवार में ही भावपूर्ण प्रभाव स्नेह एवं आदर सम्मान का रिश्ता रखा एवं परिवार की आज्ञा को हमेशा शिरोधार्य किया गया। बड़ी ननंद श्रीमती भागवत बेन नागर के साथ अटुट लगाव, सामाजिक, धार्मिक एवं पारिवारिक कार्यों में उनका सानिध्य सदैव मातृरूप में पाया। जिसकी क्षतिपूर्ति अल्प समय में उनके लिये भी असम्भव है। श्री दुर्गाशंकरजी नागर द्वारा संस्थापित ट्रस्ट श्री हंसादेवी नागर स्मृति महिला कल्याण एवं महिला शिक्षा जागृति पारमार्थिक ट्रस्ट जो कि ग्राम घुन्सी में प्रथम कथा के छात्र-छात्राओं को पाठ्य पुस्तकों का प्रथम एवं कक्षा 5 वीं एवं कक्षा 8वीं में शाला के प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को नगद पुरस्कार प्रदान करती है। इसका पुनः संचालन एवं शुरुआत भी उन्हीं के इच्छानुसार पुत्र एवं भतीजों के द्वारा 2008 से किया गया। जो कि विगत 4-5 वर्षों से श्री दुर्गाशंकरजी की अस्वस्थता एवं असामयिक स्वर्गवास के कारण बंद हो गया था। इस कार्य के प्रयोजन हेतु उन्होंने अपनी ओर से ट्रस्ट में स्वेच्छा से दान राशि प्रदान की। पति श्री दुर्गाशंकर नागर की 59 वर्ष का अल्प उम्र में स्वर्गवास होने के कारण मानसिक आघात रहा एवं 2 वर्ष के अल्प समय पश्चात ही 59 वर्ष की आयु में ही कुसुम नागर का भी स्वर्गवास हो गया। अपने नाम अनुरूप जीवन भर अपनी स्नेह-करुणा, त्याग एवं निरन्तर कर्म करते रहने की कुसुमरूपी सुगन्ध फैलाते रहे, जो कि परिवार एवं समाज में हमेशा एक आदर्श के रूप में फैलती रहेगी।

❖ बाबुलाल शर्मा, देवास

मनोनयन

योगेन्द्र त्रिवेदी

डॉ. अरुणा व्यास

मनीष मेहता

उज्जैन। श्री हाटकेश्वर जयन्ती 8 अप्रैल 2009 को उज्जैन नागर ब्राह्मण समाज की वार्षिक साधारण सभा की बैठक में उज्जैन नागर ब्राह्मण परिषद अध्यक्ष पद पर श्री योगेन्द्र त्रिवेदी, उज्जैन नागर ब्राह्मण युवक परिषद अध्यक्ष पद पर श्री मनीष मेहता, नागर ब्राह्मण महिला मण्डल उज्जैन के पद पर डॉ. अरुणा व्यास का सर्वानुमति से मनोनयन किया गया। मनोनयन पर दिलीप मेहता कुश मेहता, हेमन्त व्यास, हेमन्त त्रिवेदी, प्रमोद त्रिवेदी, योगेश मेहता, रमेश नागर 'परोत' देवेन्द्र मेहता, मधुसुदन नागर, डॉ. मनोज शर्मा, ललीत नागर, कन्हैयालाल मेहता, सन्तोष नागर, नरेन्द्र नागर, रंजन जोशी, मनोहर शुक्ल, विकास नागर, अतुल मेहता, संजय व्यास, अनिल नागर, शैलेन्द्र व्यास, संजय नागर, अमीत नागर, संजय जोशी, नवीन त्रिवेदी ने बधाई दी।

नरसी मेहता जयंति मनाई जावेगी

उज्जैन। मप्र. नागर ब्राह्मण परिषद, शाखा उज्जैन के तत्वावधान में दिनांक 8 मई 2009, शुक्रवार को प्रवर सन्त नागर रत्न श्री नरसी मेहता की 603वीं जयन्ती मनाई जा रही है इस अवसर पर सपरिवार आपकी उपस्थिती सादर साग्रह प्रार्थनीय है। कार्यक्रम- भजन संध्या (श्री मनोहर शुक्ल, हरीश नागर एवं साथीगण) सायं 7 से रात्री 9.30 तक स्थान- श्री हाटकेश्वर धर्मशाला, उर्दूपुरा महाप्रसादी- रात्री 9.30।

-मनीष मेहता

अध्यक्ष मप्र. नागर ब्राह्मण युवक परिषद

स्वदेश आगमन

उज्जैन। श्री निशान्त दीपक मण्डलोई पाटनी कम्प्यूटर सिस्टम ली. की ओर से 1 वर्ष तक अमेरिका में अपनी सेवा देने के बाद दि. 24 मई 09 को पुनः भारत आ रहे हैं। पुनः दि. 11 जून 09 को पुनः अमेरिका प्रस्थान करेंगे।

प्रस्तुति- मनीष मेहता, उज्जैन

संजीवनी सेवा संगम
Regi. No. 10582

प्रवेश प्रारंभ

डिप्लोमा इन स्पेशल एज्युकेशन

भारतीय पुनर्वास परिषद, नई दिल्ली के अनुसार भारत में 9.4 लाख विशेष शिक्षकों की आवश्यकता है। संजीवनी सेवा संगम इस उद्देश्य की पूर्ति हेतू 'डिप्लोमा इन स्पेशल एज्युकेशन' का 2 वर्षीय कार्यक्रम अपनी संस्था में चला रही है। जिसके फलस्वरूप 120 प्रशिक्षणार्थी यहां से प्राशिक्षित होकर भारत के विभिन्न विशेष स्कूल Ddrc's में Mobile शिक्षक, रिर्सोस शिक्षक, कोर्डिनेटर आदि के पद पर कार्यरत हैं। इस कोर्स का संचालन मनीपाल यूनिवर्सिटी, कर्नाटक द्वारा किया जाता है एवं RCI नई दिल्ली से यह मान्यता प्राप्त है।

फार्म मिलने व भरने की अंतिम तिथि

फार्म मिलने व भरने की अंतिम तिथि 15 अप्रैल से 31 मई 2009 तक है।
उम्मीदवार किसी भी प्रकार की जानकारी के लिये संस्था के फोन नं. 0731-2553823 पर सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक सम्पर्क कर सकते हैं।
फार्म फीस सामान्य श्रेणी के लिये 500 रु. एवं अनुसूचित जाति एवं जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग के लिये 350 रु.।
पोस्ट द्वारा सामान्य श्रेणी के लिये 550 रु. एवं अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग के लिए 400 रु.।

योग्यता

उम्मीदवार की योग्यता कम से कम
10+2 में 45 प्रतिशत अंक होना चाहिए।
कोर्स में केवल 25 सीट उपलब्ध है।
उम्मीदवार की अधिकतम आयु सीमा 30 वर्ष होना चाहिए।
मध्यप्रदेश के अभ्यार्थी को प्राथमिकता।

पता- संजीवनी सेवा संगम, श्रवण बाधितार्थ संस्थान एवं संसाधन केन्द्र, बॉम्बे हास्पिटल के पास स्कीम नं. 54 विजय नगर, इन्दौर-10

सचिव श्रीमती शारदा मण्डलोई, मो. 9425085052